किन्तु लोक कल्याण मार्ग ही केवल उसने अपनाया,
वही गोपियाँ का नटवर फिर योगिराज कहलाया,
गीता की हर पंक्ति में अर्जुन को वे समझाते ।
आगे बढ़ नरसिंह जगत के झू सब रिश्ते नाते,
अति विस्तृत कर्तव्य मार्ग है हर मानव इस ओर चले,
जीवन दीप जले ।
वीर प्रताप, शिवा वैरागी सबके है संदेश यही,
मातृभूमि हित जो मरता है मां का सच्चा पुत्र वही
वही सुमन सुरभित हो, खिलते जो कांटों के बीच पले
जीवन दीप जले ।।

1. जीवन को दीप कहने के पीछे क्या आशय है ?
   (क) दीप के समान चमकने वाला (ख) दीप की भाँति जलने वाला
   (ग) दीप के समान स्वयं जल कर दूसरे के हित करना
   (घ) दीप की भाँति प्रकाश करनेवाला
2. रामचन्द्र के जीवन के बारे में क्या कहा गया है ?
   (क) उन्होंने स्वयं कष्ट सहकर दूसरों का हित किया
   (ख) पिता की आज्ञा का पालन किया
   (ग) उन्होंने जान बूझकर जीवन में कष्ट सहन किया
   (घ) वे सत्य को मानते थे
3. कृष्ण ने अर्जुन को क्या संदेश दिया ?
   (क) रिश्ते नाते के महत्व का (ख) आत्म तत्व का
   (ग) कर्तव्य पथ का (घ) मानवता का
5. सच्चा सपूत किसे कहा गया है ?
   (क) जो सदा सत्य पथ पर चले ।

●

3. मूल्यवान पूंजी किसे कहा गया है ?

(क) भारत की प्राकृतिक संपदा को (ख) भारत की धार्मिक विरासत को

(ग) गांधीजी और भारत की सांस्कृतिक विरासत को

(घ) गांधीजी की वैचारिक संपदा को

4. राष्ट्रपति पद संभालते हुए उन्होंने स्वरूप के बारे में क्या इच्छा प्रकट की ?

(क) भारत को एक बड़ा राष्ट्र बनाने की

(ख) भारत को आत्मनिर्भर और विकसित बनाने की

(ग) भारत के देशवासियों को प्यार और प्रसन्नता से घर बनाने की

(घ) भारत को विश्व में पहचान बनाने की

5. जाकिर साहब को गांधीजी का अंतिम उत्तराधिकारी क्यों कहा गया है ?

(क) वे गांधीजी के मूल्यों मे विश्वास रखनेवाले अंतिम कड़ी थे ।

(ख) वे गांधीजी के समान प्रेम ओर आत्मीयता से पूर्ण नेता थे ।

(ग) वे गांधीजी के मूल्यों की रक्षा करना चाहते थे ।

(घ) वे नई पीढ़ी ओर गांधीजी के विचारों में दूरी को रखकर दुखी थे

3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही के सही विकल्प चुनिए– $1 \times 5 = 5$

जीवन दीप जले ।

जीवन दीप ले ऐसा सब जग को ज्योति मिले

जीवन दीप जले ।

छोड़े अवध माया की नगरी,, कानन को प्रस्थान किया,

सुख वैभव को लात मारकर, कष्टों का सहवास किया,

षटरस व्यंजन त्याग जंगली फल खाए सर नीर पीया

स्वयं कंटकों को चूमा, औरों के कंटक दूर किए

जन्म सफल है उस मानव का जो पर हित ही सदा जिए

तृशितों को सुरसरि देने जो हिम गिरि सा चुपचाप गले

जीवन दीप जले ।।

रसिक शिरोमणि कृष्णचन्द्र ने वृन्दावन को बिरसाया

छोड़ बिलखते ग्वाल बाल वह निर्मोही भीक कहलाया,

4. भारत मं अनेकरूपता दिखाई देती है

(क) पर्वतों, नदियों एवं वनों में (ख) देशवासियों की शारीरिक रचना में

(ग) आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्रों में (घ) भारतीयों के विचारों और विश्वासों में

5. जिस मूलभूत एकता के दर्शन होते हैं वह वास्तव में आश्चर्य का विषय है। वाक्य का प्रकार है :

(क) संयुक्त (ख) मिश्र

(ग) सरल (घ) जटिल

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही के सही विकल्प चुनिए– $1 \times 5 = 5$

जाकिर साहब के बारे में कुछ बातें अविस्मरणीय हैं 13 मई 1967 ई. को राष्ट्रपति का पद संभालते हुए उन्होंने कहा था सारा भारत मेरा घर है। मैं सच्ची लगन से इस घर को मजबूत और सुन्दर बनाने की कोशिश करूँगां ताकि वह मेरे महान देशवासियों का उपयुक्त घर हो जिसमें इंसाफ और खुशहाली का अपना स्थान हो ।

अपने साफ सुथरे सुरूचिपूर्ण खादी के कपड़ों और सुरूचि से संवारी दाढ़ी के बीच चमकते हल्के गुलाबी गौर वर्ण मुखमंडल से जाकिर साहब प्रेम आत्मीयता में गांधीजी के अंतिम उत्तराधिकारी नजर आते थे। देश के आने वाले बच्चे बापू को भूल न जाएं इस संबंस में उन्होंने एक बार कहा था आप आज्ञा दें तो इस अवसर से लाभ उठाकर गांधी जी के संबंध में कुछ आपसे कहूँ । उनके जानने और समझने से उनके काम को समझना और उसमें जीजान से लगना जरा सरल हो सकता है। यह इसलिए और कहना चाहता हूं कि अब दिन पर दिन उन लोगों की संख्या घट रही है जिन्होंने गांधीजी को देखा था उनके साथ काम किया था उनके बताए हुए रास्तों पर चले थें जब वे दुनियासे गए तो वे लोग बच्चे थे। बहुत से पैदा भी नहीं हुए थे। उनकी गिनती अब दिन पर दिन बढ़ती ही जाएगी । नए हाल होंगे नया काल होगा नए जंजाल होंगे ऐसा न हो कि ये गांधीजी और उनके कार्यों की तह में जो विचार थे उनको भूला बैठे । ऐसा हुआ तो हमारी सबकसे मूल्यवान पूंजी बर्बाद हो जाएगी ।

1. प्रस्तुत गद्यांश के लिए उचित शीर्षक दीजिए ।

(क) अविस्मरणीय तथ्य (ख) जाकिर साहब

(ग) मूल्यवान पूंजी (घ0 हम और हमारी विरासत

2. जाकिर साहब के चरित्र की दो विशेषताएँ बताइए।

(क) विनम्र और दृढ़ चरित्र (ख) आत्मीयतापूर्ण और भविश्योन्मुखी

(ग) (क) और (ख) दोनों विकल्प सही है (घ) कोई विकल्प सही नहीं है

आदर्श प्रश्न (अपठित गद्यांश)

हिन्दी (पाठ्यक्रम 'अ')

कक्षा-दसवीं **अधिकतम अंक-90** **निर्धारित समय : 3 घंटे**

निर्देश : 1. प्रश्न पत्र के चार खण्ड हैं–क, ख, ग और घ

2. चारों खंडों के प्रश्न के उत्तर देना अनिवार्य है।

3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमशः दीजिए ।

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही के सही विकल्प चुनिए– $1 \times 5 = 5$

भारत जैसे विशाल देश में विविधताओं का होना स्वाभाविक है। एक विद्वान ने कहा है कि भारत विश्व का संक्षिप्त रूप है। दिनकर जी ने कहा था भारत छोटे पैमाने पर पूरा विश्व है लेकिन इस देश की विशेषता रही है कि इसकी विविधता में एकत भी निहित है। यह बात दूसरी है कि विविधता अधिक दिखाई पड़ती है और मौलिक एकता कम किन्तु पूर्व दिशा में सूर्योदय के सत्य होने की भाँति मूल का अर्थ होता है जड़ और मौलिक एकता से मतलब होता है मूल । पाई जाने वाली एकता। उदाहरण के रूप में एक पेड़ को लिया जा सकता है। पेड़ ऐ है इनकी जड़ जमीन के अन्दर छिपी है किन्तु इसकी अनेक शाखाएँ हैं इसमें कई डाल और पत्ते होते हैं। इसी तरह भारत देश एक है। इसमें भिन्नताएँ भी हैं किन्तु इसके मूल में एकता भी पाई जाती है। भिन्नताएँ दिखाई पड़ती है। किन्तु एकता नीचे जड़ में है। अतः वह गंभीरतापूर्वक सोचने विचारने पर दिखाई पड़ती है। सभ्यता और संस्कृति अभी तक जीवित है । आर्थिक सामाजिक धार्मिक क्षेत्रों में अनेकरूपता के साथ जिस मूलभूत एकता के दर्शन होते हैं वह वास्तव में आश्चर्य का विषय है।

1. भारत छोटे पैमाने पर पूरा विश्व कैसे है ?

(क) अनेक जातियों के कारण (ख) विविध धर्मों के कारण

(ग) भिन्न-भिन्न भाषाओं के कारण (घ) स्वाभाविक विविधताओं के कारण

2. भारत की विशेषता रही है

(क) भौगोलिक विशालता (ख) सांस्कृतिक महानता

(ग) अनकरूपता में एकता (घ) नदियों की पवित्रता

3. विविधता दिखाई पड़ती है एकता नहीं, क्योंकि एकता :

(क) पेड़ की शाखा तुल है (ख) पेड़ के पत्तों जैसी है

(ग) पेड़ के तने जैसे हैं ? (घ) पेड़ की जड़ जैसी है

8. अखबारों ने जिन्दा नाक लगाने की खबर को किस तरह से प्रस्तुत किया ? जॉर्ज पंचम की नाक पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर–अखबारों में जॉर्ज पंचम की नाक लगाने की खबर छापने की बात आई तो इसे भी गौरव और आत्म सम्मान का आधार समझा जाने लगा इसलिए अखबारों ने जॉर्ज पंचम की जिन्दा नाक लगाने की खबर को बड़े गौरवपूर्ण तरीके से छापा था। यह बात छपी थी कि नाक जिन्दा लगाई गई और किसी भी तरह पत्थर की नहीं लगती ।

9. जॉर्ज पंचम की नाक लगने वाली खबर के दिन अखबार चुप क्यों थे ?

उत्तर–उस दिन सभी अखबार वाले इसलिए चुप थे क्योंकि भारत में न तो कहीं कोई अभिनन्दन कार्यक्रम हुआ न सम्मान पत्र भेंट किए गए न ही नेताओं ने उद्घाटन किया, न कोई फीता काटा गया, न सार्वजनिक सभा हुई इसलिए अखबारों को चुप रहना पड़ा । यहाँ तक कि हवाई अड्डे या स्टेशन पर स्वागत समारोह भी नहीं हुआ इसलिए किसी स्वागत समारोह का कोई समाचार और चित्र अखबारों में नहीं छपा था।

वक्त अपने कपड़ों पर आवश्यकता से अधिक ध्यान देना । चकाचौंध पैदा करना आवश्यक है परन्तु यदि रानी अपने कपड़ों को लेकर परेशान है तो दरजी बेचारा क्या करे ? उसे तो रानी की शान और वातावरण के अनुकूल वेशभूषा तैयार करनी ही पड़ेगी ।

3. और देखते ही देखते नई दिल्ली का कायापलट होने लगा–नई दिल्ली की काया पलट के लिए क्या-क्या प्रयत्न किए होंगे ?

उत्तर–नई दिल्ली के कायापलट के लिए सबसे पहले गन्दगी के ढेरों को हटाया गया होगा। सड़कों, सरकारी इमारतों और पर्यटन स्थल को रंगा पोता और और सजाया संवारा गया होगा । उनपर बिजलियों का प्रकाश किया गया होगा। सदा से बंद पड़े फब्बारे चलाए गए होंगे। भीड़-भाड़ वाली जगह पर ट्रैफिक पुलिस का विशेष प्रबंध किया गया होगा।

4. जॉर्ज पंचक की लाट की नाक को पुनः लगाने के लिए मूर्तिकार ने क्या-क्या यत्न किए ?

उत्तर–जॉर्ज पंचम की लाट की नाक को लगाने के लिए मूर्तिकार ने अनेक प्रयत्न किए । उसने सबसे पहले पत्थर को खोजने का प्रयत्न किया जिससे वह मूर्ति बनी थी । इसके लिए पहले उसने सरकारी फाइलें ढूँढ़वाई। फिर भारत के सभी पहाड़ों और पत्थर की खानों का दौरा किया। फिर भारत के सभी महापुरुषों की मूर्तियों का निरीक्षण करने के लिए पूरे देश का दौरा किया। अंत में जीवित व्यक्ति की नाक काट कर जॉर्ज पंचक की मूर्ति पर लगा दी ।

6. लेखक ने ऐसा क्यों कहा कि नई दिल्ली में सब था.....सिर्फ नाक नहीं थी ।

उत्तर–नाक मान सम्मान और आत्मगौरव का प्रतीक है। दिल्ली में सब कुछ था किन्तु नाक नहीं थी। इसका सामान्य अर्थ है कि जॉर्ज की लाट में नाक नहीं थी, किन्तु इसका व्यंग्यात्मक अर्थ यह है कि दिल्ली में गुलामों की कमी नहीं थी । नाक नहीं थी अर्थात् गुलामी के कारण सरकारी तन्त्र की इज्जत नहीं थी । उनकी गुलामी की मानसिकता प्रकाशित हो रही थी। उन्हें चिन्ता आत्मसम्मान की नहीं थी। उन्हें तो गुलामी कायम रखने की चिन्ता सता रही थी ।

7. जॉर्ज पंचक की लाट पर किसी भी भारतीय नेता यहाँ तक कि भारतीय बच्चे की नाक फिट न होने की बात से लेखक किस ओर संकेत करना चाहता है ?

उत्तर–नाक की चर्चा द्वारा लेखक ने भारतीयों की गरिमा का परिचय दिया है। नाक मान प्रतिष्ठा और स्वाभिमान का प्रतीक है । इसके द्वारा लेखक यह संकेत देना चाहता है कि भारतीय नेताओं की बात कौन कहे बच्चों की नाक भी जॉर्ज पंचम की नाक से बड़ी निकली। अर्थात् भारतीय बच्चों का मान सम्मान, उनकी प्रतिष्ठा भी जॉर्ज पंचम से अधिक है। जॉर्ज की नाक सबसे छोटी निकली कहने का अर्थ यह है कि जॉर्ज को कोई महत्व नहीं है उनकी कोई प्रतिष्ठा नहीं है ।

3. फसल को हाथों के स्पश्र की महिमा क्यों माना गया है ?

उत्तर–फसलों को उगाने के लिए किसान दिन रात कड़ी मेहनत करते हैं तब कहीं जाकर खेतों में फसल लहलहाती है । किसानों के इसी रस को सम्मान देने के लिए फसल को हाथों के स्पर्श को महिमा माना गया है।

प्रश्न-उत्तर

1. कविता में फसल उपजाने के लिए किन आवश्यक तत्वों की बात कही गई है ?

उत्तर–कविता में फसल उपजाने के लिए निम्न तत्वों की बात कही गयी है–

पानी मिट्टी धूप हवा

मानव श्रम

4. फसल को हाथों के स्पर्श की महिमा क्यों माना गया है ?

उत्तर–फसलों को उगाने के लिए किसान दिन रात कड़ी मेहनत करते हैं तब कहीं जाकर खेतों में फसल लहलहाती है । किसानों के इसी रस को सम्मान देने के लिए फसल को हाथों के स्पर्श को महिमा माना गया है।

2. जॉर्ज पंचम की नाक –कमलेश्वर

1. सरकारी तंत्र में जॉर्ज पंचम की नाक लगाने को लेकर जो चिन्ता या बदहवासी दिखाई देती है वह उनकी किस मानसिकता को दर्शाती है ?

उत्तर–सरकारी तंत्र में जॉर्ज पंचम की नाक लगाने को लेकर जो चिन्ता और बदहवासी दिखाई देती है उससे उनकी गुलाम मानसिकता का बोध होता है। इससे पता चलता है कि वे आजाद होकर भी अंग्रेजों के गुलाम हैं। उन्हें अपने उस अतिथि की नाक बहुत मूल्यवान प्रतीत होती है जिसने भारत को गुलाम बनाया और अपमानित किया । वे नहीं चाहते कि वे जॉर्ज पंचम जैसे लोगों के कारनामे का उजागर करके अपनी नाराजगी प्रकट करे वे उन्हें अब भी सम्मान देकर गुलामी पर मोहर लगाए रखना चाहते हैं।

इस पाठ में अतिथि देवो भव: की परम्परा पर भी प्रश्न चिह्न लगाया गया है। लेखक कहना चाहता है कि अतिथि का सम्मान करना ठीक है किन्तु वह अपने सम्मान की कीमत पर नहीं होना चाहिए ।

2. रानी एलिजाबेथ के दरजी की परेशानी का क्या कारण था ? उसकी परेशानी को आप किस तरह तर्कसंगत ठहराएँगे ।

उत्तर–रानी एलिजाबेथ के दरजी की परेशानी यह थी कि रानी भारत, पाकिस्तान और नेपाल के शाही दौरे पर कौन-सी वेशभूषा धारण करेंगे। उसे लगता था कि रानी की आन बान शान भी बनी रहनी चाहिए और उसकी वेशभूषा विभिन्न देशों के अनुकूल भी हो । दरजी की परेशानी जरूरत से अधिक है किसी देश में घूमते

उत्तर–बालक ने कवि को प्रथम बार देखा हे और उसे पहचानने के प्रयास में पलक नहीं झपक रहा ।

2. शिशु से अपनी नजर हटाने की अनुमति क्यों चाहता है ?

उत्तर–कवि को लगता है कि लगातार देखने से शिशु थक जाएगा इसलिए विराम देना चाहता है ?

3. मां के माध्यम न बनने पर कवि क्यों देखने और जानने को वंचित रह जाता ?

उत्तर–मां के माध्यम न बनने पर कवि शिशु के बाल सौन्दर्य और बाल सुलभ क्रियाओं को देखने से वंचित रह जाता ।

3. धन्य तुम मां भी.....बड़ी ही छविमान ।

1. कवि ने स्वयं को प्रवासी इतर, अतिथि जैसे संबोधनों से क्यों संबोधित किया है ?

उत्तर–कवि आजीविका हेतु बाहर रहता है । कभी-कभी ही उसका घर आना हो पाता है अत: बच्चे से उसका संपर्क नाममात्र को ही हो पाता है। इसलिए कवि ने स्वयं को प्रवासी इतर अतिथि जैसे संबोधनों से संबोधित किया है।

2. प्रस्तुत पद में मधुपर्क का सांकेतिक अर्थ क्या है ?

उत्तर–प्रस्तुत पद में मधुपर्क का सांकेतिक अर्थ है मां की ममता तथा वात्सल्य जो वह अपने बच्चे पर लुटाती है।

3. कवि बच्चे की मां को धन्य क्यों कह रहा है ?

उत्तर–कवि बच्चे की मां को धन्य कह रहा है क्योंकि उसे सदा ही बच्चे का सामीप्य सुख मिलता है । जबकि कवि इससे वंचित है ।

6. फसल–नागार्जुन

फसल पैदा क्या और उसे पैदा करने में किन-किन तत्वों का योगदान होता है। यही इस कविता में बताया गया है ।

कविता के द्वारा स्पष्ट किया गया है कि प्रकृति एवं मनुष्य के सहयोग से ही सृजन संभव है ।

पद–फसल क्या है.....हवा की थिरकन का

1. पद की भाषा पर टिप्पणी करें ।

उत्तर–भाषा खड़ी बोली हिन्दी है तथा तत्सम शब्दावली है ।

2. फसल को नदियों के पानी का जादू क्यों कहा गया है ?

उत्तर–बिना नदियों के पानी के फसल का उत्पादन संभव नहीं है इसलिए फसल को नदियों के पानी का जादू कहा गया है ।

पंक्ति संकेत–पत्तों से लदी.....पट नहीं रही है ।

1. पाट पाट में कौन सा अलकार है ?

उत्तर–पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार ।

2. उर में पुष्पमाल पड़ने का क्या अर्थ है ?

उत्तर–कवि कहना चाहता है कि फागुन के आगमन से वृक्ष पुष्पों से लद गए हैं ।

3. फागुन की शोभा का वर्णन कीजिए ।

उत्तर–फागुन की शोभा सर्वत्र व्याप्त हो गयी है। वृक्ष पृष्पों से लद गए हैं । उसकी शोभा प्रकृति में समा नहीं रही है ।

प्रश्नोत्तर

1. कवि की आंख फागुन की सुन्दरता से क्यों नहीं हट रही है ?

उत्तर–फागुन की शोभा चारों ओर फैल गई है उसका सौन्दर्य फूलों, पत्तों तथा हवाओं के माध्यम से प्रकट हो रहा है । इसलिए कवि की आंख फागुन की सुन्दरता से हट नहीं रही है ।

2. फागुन के सांस लेने से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर–फागुन के सांस लेने के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि फागुन के मौसम में सुगन्धित हवाएँ चल रही है जिससे उसकी शोभा चारों ओर फैल रही है।

60 यह दंतुरिन मुस्कान–नागार्जुन

1. तुम्हारी यह दंतुरिन.....होगा कठिन पाषाण ।

1. जलजात का पर्यायवाची लिखिए ।

उत्तर–कमल ।

2. दंतुरिन मुस्कान से क्या आशय है ?

उत्तर–नन्हें बालक जिसके अभी दांत निकल रहे हैं उस बालक की मुस्कान को दंतुरिन मुस्कान कहा गया है ।

3. परस का तत्सम रूप लिखिए ।

उत्तर–स्पर्श ।

4. बालक की मुस्कान की क्या विशेषता है ?

उत्तर–बालक की मुस्कान मृतक में भी जान डालने की क्षमता रखती है ।

2. तुम मुझे पाए नहीं .....यह तुम्हारी मुस्कान ।

1. शिशु द्वारा कवि को अनिमेष देखने का कारण स्पष्ट कीजिए ।

3. कवि ने अपने को थका पथिक क्यों कहा है ?

उत्तर–कवि ने उम्र के इस पड़ाव तक आने के लिए लम्बा रास्ता तय किया है तथा काफी दुख भी झेले हैं। इन सब स्थितियों को झेलकर वह काफी थक गए हैं ।

4. यह कविता किस वाद की कविता है ?

उत्तर–छायावाद की ं

प्रश्न-उत्तर

1. कवि आत्मकथा लिखने से क्यों बचना चाहता है ?

उत्तर–कवि आत्मकथा लिखने से बचना चाहता है क्योंकि उसके जीवन में कहने या लिखने को कुछ विशेष नहीं है। साथ ही साथ वह अपने जीवन की पुरानी यादों को ताजा नहीं करना चाहता क्योंकि ये यादें न केवल उसे दुख देंगी बल्कि दूसरे लोगों के कवि के साथ किए गए बुरे व्यवहार को उद्घाटित कर देंगी ।

2. स्मृति को पाथेय बनाने का क्या अर्थ है ?

उत्तर–पाथेय का अर्थ होता है संबल या सहारा । स्मृति को पाथेय बनाने का अर्थ है कि कवि अपनी पुरानी मधुर यादों के सहारे ही अपनी जिन्दगी बिता रहा है क्योंकि उसके वत्रमान जीवन में ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसे धीरज बंधा सके ।

5. अट नहीं रही है–सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

अट नहीं रही कविता एक प्रकृति सौन्दर्य वर्णन की छायावादी कविता है जिसमें फागुन मास की मस्ती शोभा रंग आदि का मनमोहक वर्णन किया गया है ।

पंक्ति संकेत–अट नहीं रही है.....हट नहीं रही है ।

1. उपर्युक्त पंक्तियों में कवि किसका वर्णन कर रहा है ?

उत्तर–फाल्गुन के सौन्दर्य का ।

2. अट नहीं रही है का प्रयोग यहाँ किसके लिए हुआ है और क्यों ?

उत्तर–प्रकृति सौन्दर्य का क्योंकि प्रकृति की शोभा अद्वितीय है।

3. फागुन के सांस लेते ही प्रकृति में क्या परिवर्तन दिखाई देते हैं ?

उत्तर–संपूर्ण वातावरण सुवासित हो उठा है । प्रकृति पल्लवित पुष्पित हो गई है ।

4. प्रकृति के परिवत्रन का कवि के मन पर क्या प्रभाव पड़ रहा है ?

उत्तर–कवि का मन कल्पना की उड़ान भरने लगता है ।

4. घर घर व पर पर शब्द के द्वारवा कवि क्या व्यक्त करना चाहता है ?

उत्तर–घर घर का तात्पर्य है सम्पूर्ण धरा । पर पर शब्द कवि की अति उत्साह की मनोवृति को व्यक्त करता है ।

1. तप्त धरा से क्या आशय है ?

उत्तर–इसका प्रतिकार्थ है कि धरती के मनुष्य दुखों से पीड़ित व्याकुल है तथा वे दिन प्रतिदिन के शोषण का शिकार है ।

2. इस पद से बादल का पर्यायवाची शब्द छांटकर लिखिए ।

उत्तर–घन ।

3. कवि ने बादल से क्या प्रार्थना की है ?

उत्तर–कवि बादल से प्रार्थना करता हे कि वह खूब बरसे और इस जग और धरा को शीतल कर दे अर्थात् जन के कष्टों को हर ले ।

प्रश्न-उत्तर :

1. कविता में बादल किन-किन अर्थों की ओर संकेत करता है ?

उत्तर–बादल प्यासों की प्यास बुझाने तथा खेतों में जल पहुँचाने वाला है। इस अर्थ में वह निर्माण का प्रतीक है। बादल क्रांति का संदेश लाकर शोषकों का अंत करता हैं इस अर्थ में वह विनाश का प्रतीक है ।

2. कवि बादल से फुहार रिमझिम या बरसने के स्थान पर गरजने के लिए क्यों कहता है ?

उत्तर–कवि बादलों को क्रांति या बदलाव का प्रतीक मानता है । बदलाव हेतु तीव्र प्रहार शक्ति की आवश्यकता होती है । यह कार्य धीमे-धमे या मृदुता से नहीं हो सकता । बादल के गर्जन-तर्जन में ही यह शक्ति निहित है। अत: कवि से फुहार, रिमझिम या बरसने के स्थान पर गरजने के लिए कहता है ।

3. कवि अपनी आत्मकथा क्यों नहीं सुनाना चाहता है ?

उत्तर–कवि के जीवन में सुख के क्षण क्षण्मात्र ही हैं । उसके जीवन में सर्वत्र दुख ही दुख है अत: वह अपनी आत्मकथा नहीं सुनाना चाहता है ।

पद्यांश-2

उज्ज्वल गाथा कैसे.....क्यों मेरी कथा की ।

1. किसकी स्मृति कवि के लिए पाथेय बनी है ?

उत्तर–जो कवि का प्रिय पात्र था तथा जिसका सान्निध्य कवि को प्राप्त न हो सका उसी की स्मृति कवि के लिए पाथेय बनी है।

2. कवि अपनी कथा की सीवन क्यों नहीं उघाड़ना चाहता है ?

उत्तर–कवि अपनी कथा की सीवन इसलिए नहीं उधाड़ना चाहता क्योंकि वह अपने जीवन की पुरानी यादों को ताजा नहीं करना चाहता। ये यादें न केवल उसे दुख देंगी बल्कि दूसरे लोगों के कवि के साथ किए गए बुरे व्यवहार को उद्घाटित कर देंगी ।

पद्य–1

मधुप गुन गुना कर कह जाता कौन कहानी यह अपनी,
मुरझाए गिर रही पत्तियाँ देखो कितनी आज धनी
इस गंभीर अनंत नीलिमा में असंजय जीवन इतिहास
यह लो, करते ही रहते हैं अपना व्यंग्य मलिन उपहास
तब भी कहते हो कह डालूँ दुब्रलता अपनी बीती ।
तुम सुनकर सुख पाओगे, देखोगे यह गागर रीती
किन्तु कहीं ऐसा न हो कि तुम ही खाली करने वाले
अपने को समझो, मेरा रस ले अपनी भरने वाले ।
यह विडम्बना अरी सरलते तेरी हंसी उड़ाऊँ मैं ।
भूलें अपनी या प्रवंचना औरों की दिखलाऊँ मैं ।

1. गागर रीती से क्या आशय है ?

उत्तर–इसका अर्थ है कवि के विगत जीवन में कुछ भी उल्लेखनीय नहीं है ।

2. मुरझाकर गिरती पत्तियों से क्या अर्थ निकलता है ?

उत्तर–मुरझाकर गिरती पत्तियाँ जीवन की नश्वरता का प्रतीक है ।

5.1 उत्साह–सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

पंक्ति संकेत घेर घेर.....बादल गरजो ।

1. इस पद का मुख्य स्वर क्या है ?

उत्तर–प्रकृति के माध्यम से जीवन में उत्साह का संचार ।

2. ललित के घुंघराले में प्रयुक्त अलंकार बताइए ।

उत्तर–मानवीकरण एवं पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार ।

3. कविता में किस छंद और शैली का प्रयोग किया गया है ?

उत्तर–मुक्तक छंद और संबोधन शैली ।

4. बादलों को बाल कल्पना के से क्यों कहा गया है ?

उत्तर–बादल का अस्तित्व क्षणभंगुर होता है बाल कल्पना के समान ।

5. कवि बादल को गरजने के लिए क्यों कह रहा है ?

उत्तर–नया उत्साह एवं जोश भरने के लिए सुखमय जीवन के लिए ।

पंक्ति संकेकत–विकल.....बादल गरजो ।

4. 'ब्लू' 'बर्ड' का नील पंछी शीर्ष से हिन्दी रूपान्तरण ।

5. बाइबिल का हिन्दी अनुवाद ।

7. फादर कामिल बुल्के के किन सद्गुणों के आधार पर उन्हें मानवीय करुणा से ओतप्रोत व्यक्ति कह सकते हैं ?

उत्तर–फादर के सद्गुण करुणा, प्रेम, मित्रता का भाव, सहयोगी, परिचितों के साथ सतत सम्पर्क रखना, सभी के प्रति शुभकामनाएं रखना, स्वयं कष्ट सहकर दूसरों के दुख दूर करने के लिए प्रयत्नरत रहना ।

8. लेखक ने फादर कामिल बुल्के के लिए यह क्यों कहा कि उन्हें जहरबाद से नहीं मरना चाहिए था ?

उत्तर–फादर बुल्के ने आजीवन दूसरों के दुखों को दूर करने के लिए प्रयत्न किए । वे सभी के प्रति प्रेम, सहानुभूति एवं करुणा का भाव रखते थे । अतः उनकी कष्टप्रद मौत को लेखक उनके प्रति अन्याय मानते हैं।

आत्मकथ्य–जयशंकर प्रसाद

प्र. 1. स्मृति को 'पाथेय' बनाने से कवि का क्या आशय है ।

उ. कवि अपने बीते हुए कष्टों के थपेड़ों से आहत है, निराश है। उसकी स्थिति थके हुए पथिक की तरह है जिसका बढ़ने का उत्साह समाप्त हो गया है, किन्तु जीना चाहता है और पाथेय का उपभोग कर उत्साहित होता है ।

कवि के जीने का आधार मात्र स्मृतियाँ हैं जिन्हें संजोए रखना चाहता है । निराशामय स्थिति से निकलने के लिए स्मृतियाँ ही उसका पाथेय है।

2. अचानक पुलिस आ गई और गली में सन्नाटा छा गया । (सरल वाक्य में बदलिए)

3. रवि ने कपड़े पहने, पर वह सन्तुष्ट नहीं है । (मिश्र वाक्य में बदलिए)

पेज नं. 27 का शेष

10. नेताजी का चश्मा–स्वयं प्रकाश

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों से सही विकल्प छाँटकर लिखिए–

आत्मकथ्य–जयशंकर प्रसाद

मूल भाव

आत्मकथ्य असहमति के तर्क से उत्पन्न हुई कविता है । 1932 में 'हंस पत्रिका में प्रकाशित यह कविता छायावादी शैली में लिखी गई हैं जीवन के यथार्थ एवं अभाव पक्ष की मार्मिक अभिव्यक्ति है, उनके जीवन की कथा एक सामान्य व्यक्ति के जीवन की कथा है ।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. फादर को याद करना एक उदास शांत संगीत को सुनने जैसा है। आशय स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर–प्रस्तुत पंक्ति में फादर बुल्के के व्यक्तित्व का प्रभाव दर्शाया गया है। फादर की स्मृति को उदास शांत संगीत को सुनने जैसा कहा गया है। जिस प्रकार उदास और शांत संगीत हमारे मन में भी उदासी और शांत भाव से भर देती है। फादर का अभाव लेखक को उदास कर देता है। तो उनकी स्मृतियां उन्हें शांति प्रदान करती है ।

2. फादर बुल्के के मन में संन्यास ग्रहण कर भारत जाने की बात क्यों उठी होगी ? अपने अनुमान से कारण बताइए ।

उत्तर–फादर बुल्के स्वभाव से साधु गुणों से युक्त थे । वे मानव सेवा में अपना जीवन अर्पित करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने संन्यासी जीवन ग्रहण कर भारत आने का निश्चय किया होगा । संभवत: वे भारत की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति यहाँ के ज्ञान समाज आदि से प्रभावित रहे होंगे। भारत की प्रकृति रीति रिवाज धार्मिकता, आत्मीयता, सादगी उन्हें पसंद होगी जिसके कारण उन्होंने यहां आने का मन बनाया होगा ।

3. नम आंखों को गिनना स्याही फैलाना है । आशय स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर–प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से फादर कामिल बुल्के की मृत्यु पर उपस्थित जनसमूह के दुख को व्यक्त किया गया है। फादर की मृत्यु पर वहां उपस्थित अपार जनसमूह शोक संतप्त था। सभी की आंखों में आंसू भरे थे। ऐसे में उन नम आंखों की गिनती करना स्याही फैलाना ही था। अर्थात् भावना या संवेदना को गिना या तौला नहीं जा सकता। उस समय भी रोने वालों की कोई कमी नहीं थी। सभी शोक में डूबे थे ।

4. फादर बुल्के की उपस्थिति लेखक को देवदार की छाया जैसी क्यों लगती थी ?

उत्तर–फादर हर अवसर पर लेखक के पास उपस्थित रहते थे । उनके घरेलू उत्सवों संस्कारों में फादर बड़े भाई और पुरोहित की भूमिका में होते और अपने स्नेहाशीश देते। दुख की कड़ी धूप में देवदार वृक्ष की छाया के समान शांति एवं शीतलता प्रदान करता था।

5. फादर कामिल बुल्के की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए ।

उत्तर–मित्रवत् व्यवहार सभी के लिए दया व सहयोग का भाव, सदैव प्रसन्नचित रहना ईश्वर के प्रति अटूट आस्था, सभी से मेलजोल रखना, सभी के कल्याण का भाव रखना आदि विशेषताएँ हैं ।

6. फादर कामिल बुल्के ने हिन्दी भाषा के लिए क्या-क्या कार्य किए ?

उत्तर–1. बी. ए. व एम. ए. के माध्यम से हिन्दी भाषा व साहित्य का अध्ययन ।

2. अंग्रेजी-हिन्दी कोश की रचना ।

3. शोध प्रबन्ध रामकथा उत्पत्ति और विकास ।

(स) ''भारत जाने की बात क्यों उठी ?'' नहीं जानता बस मन में यह था । उनकी शर्त मान ली गई और वह भारत आ गए । पहले 'जिसे संघ' में दो साल पादरियों के बीच धर्माचार की पढ़ाई की। फिर 9-10 वर्ष दार्जिलिंग में पढ़ते रहे। कलकत्ता से बी. ए. किया और फिर इलाहाबाद से एम.ए.। इन दिनों डॉ. धीरेन्द्र वर्मा हिन्दी विभाग के अध्यक्ष थे। शोध प्रबंध प्रयोग विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में रहकर 1950 में पूरा किया–'रामकथा उत्पत्ति और विकास' । 'परिमल' में उसके अध्याय पढे गए थे । फादर ने मातरलिंक के प्रसिद्ध नाटक 'ब्लू बर्ड' का रूपांतर भी किया है। 'नील-पंछी' के नाम से । बाद में वह सेंट जेवियर्स कॉलेज, रांची में हिन्दी तथा संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष हो गए और यहीं उन्होंने अपना प्रसिद्ध अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोश तैयार किया और बाइबिल का अनुवाद भी और वहीं बीमार पड़े पटना आए । दिल्ली आए और चले गए 47 वर्ष देश में रहकर 73 वर्ष की जिन्दगी जीकर ।

1. फादर की किस शर्त का उल्लेख हुआ है ?
   (क) सन्यासी धारण करने की
   (ख) मानव सेवा करने की
   (ग) संन्यासी बनकर भारत जाने की
   (घ) अपनी पढ़ाई जारी रखने की
2. फादर की शिक्षा से उनकी क्या विशेषता प्रकट होती है ?
   (क) वे पढ़ने में गहन रूचि रखते थे ।
   (ख) उन्हें हिन्दी से विशेष प्रेम था ।
   (ग) उनकी दृष्टि में भारतीय संस्कृति का विशेष स्थान था ।
   (घ) सभी विकल्प सही है ।
3. फादर ने इनमें से किसका अनुवाद किया ?
   (क) नील पंछी
   (ख) रामकथा उत्पत्ति और विकास
   (ग) अंग्रेजी हिन्दी कोश
   (घ) ब्लू बर्ड और बाइबिल
4. फादर के शिक्षा केन्द्रों का सही विकल्प क्या है ?
   (क) दार्जिलिंग, कलकत्ता, प्रयाग, रांची
   (ख) प्रयाग, इलाहाबाद, पटना, कलकत्ता
   (ग) इलाहाबाद, कलकत्ता, दार्जिलिंग, प्रयाग
   (घ) प्रयाग, दार्जिलिंग, कलकत्ता, दिल्ली
5. परिमल किसके लिए प्रयुक्त है ?
   (क) एक विश्वविद्यालय के लिए
   (ख) फादर की संस्था के लिए
   (ग) हिन्दी के एक विभाग का नाम
   (घ) लेखक और उसके मित्रों का साहित्यिक समूह

उत्तर–1. (ग) 2. (घ) 3. (घ) 4. (ग) 5. (घ)

5. अमृत का पर्यावाची नहीं है :

(क) अमिय (ख) पीयूष

(ग) सोम (घ) विष

उत्तर–1. (घ) 2. (ग) 3. (ग) 4. (क) 5. (घ)

(ब) उनकी चिन्ता को राष्ट्रभाषा के रूप में देखने की थी । हर मंच से इसकी तकलीफ बयान करते, इसके लिए अकाट्य तर्क देते। बस इसी एक सवाल पर उन्हें झुँझलाते देखा है और हिन्दी वालों द्वारा ही हिन्दी की उपेक्षा पर दुख करते उन्हें पाया है । घर परिवार के बारे में निजी दुख तकलीफ के बारे में पूछना उनका स्वभाव था और बड़े से बड़े दुख में उनके मुख से सांत्वना के जादू भरे दो शब्द सुनना एक ऐसी रोशनी से भर देता था जो किसी गहरी तपस्या से जनमती है। हर मौत दिखाती है जीवन को नयी राह । मुझे अपनी पत्नी और पुत्र की मृत्यु याद आ रही है और फादर के शब्दों से झरती विरल शान्ति भी ।

1. फादर को किस भाषा से प्रेम था ?

(क) हिन्दी भाषा से (ख) अपनी मातृभाषा से

(ग) अंग्रेजी भाषा से (घ) फ्रेंच भाषा से

2. फादर की झुंझलाहट किस कारण थी ?

(क) लोगों के सवालों के कारण

(ख) घर परिवार की दुख तकलीफों के कारण

(ग) हिन्दी भाषियों द्वारा ही हिन्दी की उपेक्षित स्थिति के कारण

(घ) हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा न दिलवा पाने के कारण

3. हर मौत दिखाती है जीवन को नयी राह का आशय है :

(क) मौत के बाद ही मुक्ति है (ख) मौत पुनर्जन्म के लिए राह बनाती है

(ग) मोत शाश्वत सत्य है अत: मौत पर दुखी न हो(घ) (क) एवं (ख) दोनों

4. दुख में फादर के सांत्वना भरे शब्द सुननेवाले पर क्या प्रभाव डालते थे ?

(क) जादू-सा चमत्कारी प्रभाव डालते थे

(ख) व्यक्ति को एक नयी आशा से भर देते थे

(ग) असीम शांति का अनुभव करते थे (घ) सभी विकल्प सही है

5. उपेक्षा का विलोम है :

(क) सापेक्ष (ख) अपेक्षा

(ग) परोक्ष (घ0 प्रत्यक्ष

उत्तर–1. (क) 2. (ग) 3. (ग) 4. (घ) 5. (ख)

1. बर्थ से नीचे रखे पानी से भरे लोटे को लेकर खिड़की के बाहर खीरों को अच्छी तरह धोते हैं और तौलिए से पोंछते हैं ।

2. जेब से चाकू निकाल कर खीरे के सिर को काट कर और गोदकर झाग निकालते हैं।

3. खीरों को सावधानी से छीलते हैं फांकें बनाते हैं और बिछली तौलिए पर करीने से सजाकर देखते रहते हैं।

4. कटी हुई फांकों पर जीरा मिले नमक को और काली मिर्च को बुरकते हैं ।

5. खीरा सामने देखकर खीरे का रसास्वादन मन-ही-मन करने लगते हैं और मुँह में पानी भर आता है।

13. मानवीय करुणा की दिव्य चमक–सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

(अ) जिसकी रगों में दूसरों के लिए मिठास भरे अमृत के अतिरिक्त और कुछ नहीं था उसके लिए इस जहर का विधान क्यों हो ? यह सवाल किस ईश्वर से पूछे ? प्रभु की आस्था ही जिसका अस्तित्व था । वह देह की इस यातना की परीक्षा उम्र की आखिरी देहरी पर क्यों दे ? एक लम्बी, पादरी के सफेद चोंगे से ढकी आकृति सामने है गोरा रंग, सफेद झाँई मारती भूरी दाढ़ी, नीली आँखें बाँहें खोल गले लगाने को आतुर । इतनी ममता, इतना अपनत्व इस साधु में अपने हर एक प्रियजन के लिए उमड़ता रहता था ।

1. फादर किसे कहा गया है ?

(क) पिताजी (ख) लेखक के पिता

(ग) चर्च के पोप (घ) फादर कामिल बुल्के

2. फादर का स्वर्गवास किन परिस्थितियों में हुआ ?

(क) प्राकृतिक व सामान्य मृत्यु (ख) जहर देकर षड्यंत्रपूर्वक मार दिया

(ग) लम्बी बीमारी के कारण कष्टप्रद मृत्यु (घ) (ख) एवं (ग) दोनों

3. फादर को साधु की संज्ञा दी क्योंकि :

(क) वे संन्यासी थे (ख) वे ईश्वर की भक्ति में लीन रहते थे

(ग) वे लोगों से प्रेम सहानुभूति मैत्री व सहयोग का भाव रखते थे ।

(घ) वे लम्बी दाढ़ी सफेद चोंगा धारण करते थे

4. फादर लेखक के साथ कैसा व्यवहार करते थे ?

(क) अपनत्वपूर्ण (ख) सम्मानपूर्ण

(ग) ढोंगपूर्ण (घ) औपचारिक

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. नवाबों में एक विशेष प्रकार की नफासत और नजाकत देखने को मिलती है । लखनवी अंदाज पाठ के आधार पर उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर–नवाब सदा से एक विशेष प्रकार की नफासत और नजाकत के लिए मशहूर है। लखनवी अंदाज पाठ में भी नवाबों की इसी नफासत और नजाकत का उदाहरण मिलता है। नवाब साहब खीरे खाने के लिए यत्नपूर्वक तैयारी करते हैं। खीरे काटकर उन पर नमक मिर्च लगाते हैं किन्तु बिना खाए ही केवल सूंघकर रसास्वादन कर खिड़की से बाहर फेंक देते हैं और फिर इस प्रकार लेट जाते हैं। जैसे इस सारी प्रक्रिया में बहुत थक गए हों ऐसी नफासत व नजाकत नवाबों में ही दिखाई देती है।

2. आपके विचार में नवाब साहब ने नमक मिर्च लगे खीरे की फांकों को खिड़की से बाहर क्यों फेंक दी ?

उत्तर–नवाब साहब ने खीरे की फांकों को खिड़की से बाहर संभवत: इसलिए फेंक दिया होगा क्योंकि वे नवाब छोटे से लेखक के सामने खीरे जैसी सामान्य वस्तु का शौक करने में संकोच का अनुभव कर रहे होंगे । अपनी रईसी और नवाबी का प्रदर्शन करने के लिए उन्होंने खीरे की फांकें फेंक दी ।

3. लखनवी अंदाज पाठ में किस पर और क्या व्यंग्य किया गया है ?

उत्तर–लखनवी अंदाज पाठ में नवाब साहब के माध्यम से उस सामंती वर्ग पर व्यंग्य किया गया है, जो वास्तविकता से बेखबर एक बनावटी जीवन शैली का आदी है। नवाब द्वारा अकेले में खीरे खाने का प्रबन्ध करना और लेखक के आ जाने पर उन खीरों को सूंघकर खिड़की से बाहर फेंककर अपनी नवाबी रईसी का गर्व अनुभव करना इसी दिखावे का प्रतीक है । समाज में आज भी ऐसी दिखावटी संस्कृति दिखाई देती है ।

4. बिना विचार घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है ? लेखक के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं ?

उत्तर–हम लेखक के इस विचार से बिल्कुल भी सहमत नहीं हैं, कि बिना विचार घटना और पात्रों के भी कहानी लिखी जा सकती है। किसी भी कहानी के लिए उसकी आत्मा होता है कथानक । यह कथानक अनिवार्य रूप से किसी विचार अथवा घटना पर आधारित होता है, जिसे पात्रों के माध्यम से ही अभिव्यक्त किया जा सकता है। ये पात्र और घटनाएँ वास्तविक भी हो सकती है और काल्पनिक भी किन्तु इनके अभाव में कहानी के स्वरूप की कल्पना नहीं की जा सकती।

प्र 1. नवाब साहब द्वारा खीरा खाने की तैयारी करने का एक चित्र प्रस्तुत किया गया है । इस पूरी प्रक्रिया को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए ।

उत्तर–नवाब साहब सामने बैठे लेखक को अपने संकोच को दूर करते हुए कुछ नए अंदाज में खीरा काटने की प्रक्रिया अपनाते हैं–

(स) लखनऊ स्टेशन पर खीरा बेचने वाले खीरे के इस्तेमाल का तरीका जानते हैं । ग्राहक के लिए जीरा-मिला नमक और लाल मिर्च की पुड़िया भी हाजिर कर देते हैं । नवाब साहब ने बहुत करीने से खीरे की फाकों पर जीरा मिला नमक और लाल मिर्च की सुर्खी बुरक दी। उनकी प्रत्येक भाव भंगिमा और जबड़ों के स्फुरण से स्पष्ट था कि उस प्रक्रिया में उनका मुख खीरे के रसस्वादन की कल्ना से प्लावित हो रहा था। हम कनखियों से देखकर सोच रहे थे कि मियाँ रईस बनते हैं । लेकिन लोगों की नजरों से बच सकने के खयाल में अपनी असलियत पर उतर आए हैं। नवाब साहब ने फिर एक बार हमारी ओर देख लिया वल्लाह शौक कीजिए लखनऊ का बालम खीरा है । नमक मिर्च छिड़क दिए जाने से ताजे खीरे की पनियाती फाँके देखकर मुँह में पानी जरूरी आ रहा था लेकिन इनकार कर चुके थे। आत्म सम्मान निबाहना ही उचित समझा उत्तर दिया 'शुक्रिया इस वक्त तलब महसूस नहीं हो रही मेदा भी जरा कमजोर है कि बला शौक फरमाएँ ।

1. लखनऊ स्टेशन पर खीरा बेचने वालों की क्या विशेषता है ?

   (क) वे आसानी से बेच देते हैं । (ख) वे बातें बहुत बनाते हैं ।

   (ग) वे चटपटा मसाला भी देते हैं । (घ) वे रूखापन दिखाते हैं ।

2. नवाब साहब के हाव भावों से क्या पता चल रहा था ?

   (क) लेखक के प्रति क्रोध आ रहा था । (ख) खीरे के प्रति अरूचि ।

   (ग) खीरे के स्वाद का आनन्द । (घ) मिर्च के तीखेपन के प्रति अरूचि ।

3. नवाब साहब ने लेखक के प्रति अरूचि ।

   (क) खीरा खाना चाहेंगे (ख) आपका गंतव्य क्या है ?

   (ग) क्या काम करते हैं ? (घ) इस डिब्बे में कैसे आए ?

4. लेखक ने खीरा खाने की इच्छा होते हुए भी मना क्यों कर दिया ?

   (क) क्योंकि वह मुफ्त के खीरे नहीं खाना चाहता था

   (ख) नवाब साहब की उदासीनता के कारण ।

   (ग) उसे खीरा अच्छा नहीं लगता था ।

   (घ) पहले इंकार कर चुके थे इसलिए अब आत्मसम्मान बचाए रखना था ।

5. शौक कीजिए का तात्पर्य है :

   (क) आनंद लीजिए (ख) शौक कीजिए

   (ग) शौक हो तो लीजिए (घ) रूचिपूर्वक खाइए

उत्तर–1. (ग) 2. (ग) 3. (क) 4. (घ) 5. (क)

(ब) खाली बैठे कल्पना करते रहने की पुरानी आदत है। नवाब साहब की असुविधा और संकोच के कारण का अनुमान करने लगे। संभव है, नवाब साहब ने बिलकुल अकेले यात्रा कर सकने के अनुमान में किफायत के विचार से सेकेण्ड क्लास का टिकट खरीद लिया हो और अब गंवारा न हो कि शहर का कोई सफेदपोश उन्हें मंझले दर्जे में सफर करता देखे । अकेले सफर का वक्त काटने के लिए ही खीरे खरीदे होंगे । और अब किसी सफेदपोश के सामने खीरा कैसे खाए ? हम कनखियों से नवाब साहब की ओर देख रहे थे । नवाब साहब कुछ देर गाड़ी की खिड़की से बाहर देकर स्थिति पर गौर करते रहे । 'ओह' नवाब साहब ने सहसा हमें संबोध न किया 'आदाब-अर्ज' जनबा, खीरे का शौक फरमाएँ । नवाब साहब का सहसा भाव-परिवर्तन अच्छा नहीं लगा । भाँप लिया आप शराफत का गुमान बनाए रखने के लिए हमें भी मामूली लोगों की हरकत में लथेड़ लेना चाहते हैं। जवाब दिया शुक्रिया कि बला शौक फरमाएँ ।

1. लेखक को कौन-सी आदत है ?

   (क) खाली बैठने की (ख) कल्पना करने की

   (ग) खाली बैठकर कल्पना करने की

   (घ) खाली समय में होनेवाली कल्पनाओं पर चिन्तन की

2. लेखक ने नवाब साहब के बारे में क्या अनुमान लगाया ?

   (क) वे प्रसन्नचित्त हैं । (ख) वे एकांत के आकांक्षी हैं ।

   (ग) वे मेरा साथ पाकर खुश है । (घ) ये मेरी मौजूदगी से नाखुश हैं ।

3. नवाब साहब खिड़की से बाहर क्यों देख रहे होंगे ?

   (क) प्राकृतिक दृश्य देखना चाहते थे ।

   (ख) लेखक के प्रति उदासीनता दिखाने के लिए ।

   (ग) खीरा खाने के तरीके के विषय में सोचने के कारण ।

   (घ) चिन्तामुक्ति का प्रयास करने हेतु ।

4. नवाब साहब ने संवादहीनता दूर करने के लिए क्या किया ?

   (क) खीरा खाने का प्रस्ताव दिया (ख) कहानी सुनाने का आग्रह किया।

   (ग) अपने पास बुलाया । (घ) हालचाल पूछा ।

5. यहाँ सफेदपोश से क्या तात्पर्य है ?

   (क) बुरा व्यक्ति (ख) भला व्यक्ति

   (ग) स्वार्थी व्यक्ति (घ) संपन्न व्यक्ति

उत्तर–1. (ग) 2. (ख) 3. (ख) 4. (क) 5. (ख)

क्लास का ही ले लिया। गाड़ी छूट रही थी । सेकेण्ड क्लास के एक छोटे डिब्बे को खाली समझकर जरा दौड़कर उसमें चढ़ गए । अनुमान के प्रतिकूल डिब्बा निर्जन नहीं था। एक बर्थ पर लखनऊ की नवाबी नस्ल के एक सफेदपोश सज्जन बहुत सुविधा से पालथी मारे बैठे थे । सामने दो ताजे-चिकने खीरे तौलिए पर रखे थे। डिब्बे में हमारे सहसा कूद जाने से सज्जन की आंखों में एकांत चिन्तन में विघ्न का असंतोष दिखाई दिया । सोचा हो सकता है यह भी कहानी के लिए सूझ की चिन्ता में हों या खीरे-जैसी अपदार्थ वस्तु का शौक करते देखे जाने के संकोच में हों ।

1. लेखक सेकेण्ड क्लास के डिब्बे में क्यों जा रहे थे ?

   (क) फर्स्ट क्लास का टिकट महंगा था

   (ख) सेकेण्ड क्लास के डिब्बे में लेखक को एकांत मिल सकता था

   (ग) सेकेण्ड क्लास में नवाब साहब जा रहे हैं ।

   (घ) थर्ड क्लास में जाना लेखक को अपमान लगता था ।

2. डिब्बे की स्थिति के बारे में प्रवेश से पूर्व लेखक का अनुमान था कि :

   (क) डिब्बा एकदम खाली होगा। (ख) उसे खिड़की वाली सीट मिलेगी ।

   (ग) वह नवाब साहब से मिल सकेगा । (घ) डिब्बा बहुत सुविधाजनक होगा ।

3. लेखक के डिब्बे में चढ़ने पर नवाब साहब की क्या प्रतिक्रिया हुई ?

   (क) नवाब साहब लेखक को देखकर प्रसन्न हो गए ।

   (ख) नवाब साहब ने लेखक का मौन स्वागत किया ।

   (ग) नवाब साहब को अच्छा नहीं लगता ।

   (घ) नवाब साहब ने लेखक को अपमानित किया ।

4. लेखक ने नवाब साहब की प्रतिक्रिया का यह कारण कल्पित किया कि :

   (क) नवाब साहब को संकोच था कि लेखक ने उन्हें खीरा खाते देख लिया ।

   (ख) लेखक को लगा कि शायद नवाब साहब भी कहानी के विषय में सोच रहे हैं ।

   (ग) कोई विश्व सही नहीं है ।

   (घ) (क) और (ख) दोनों विकल्प सही है ।

5. सहसा कूद जाने का क्या तात्पर्य है ?

   (क) अचानक कूद जाना (ख) ऊपर से कूद पड़ना

   (ग) अचानक तीव्रता से प्रवेश करना (घ) डिब्बे में कूदकर चढ़ना

उत्तर–1. (ख) 2. (क) 3. (ग) 4. (घ) 5. (ग)

। अब तो बच्चे प्लास्टिक और इलेक्ट्रोनिक्स के महंगे खिलौनों से खेलते हैं। बरसात में बच्चे बाहर रह जाए तो माँ बाप की जान निकल जाती है। आज न कुएँ रहे न रहट, न खेती का शौक । इसलिए आज का युग पहले की तुलना में आधुनिक बनावटी, रसहीन हो गया।

3. माता का आँचल पाठ में बच्चों की जो दुनियां रची गई है वह आपके बचपन की दुनिया से किस तरह भिन्न है ?

उत्तर–इस पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई वे वह 1930 के आस-पास की है तब बच्चे घर के सात ? मान से साधारण सी चीजों से खेलने से काम चला लेते थे। वे प्रकृति की गोद में रहकर खुश थे। आज हमारी दुनिया पूरी तरह से भिन्न है। हमें ढेर सारी चीजें चाहिए। खेल सामग्री में भी बदलाव आ गया है। खाने-पीने की चीजों में भी काफी बदलाव आया है। हमारी दुनिया टी वी, कोल्ड ड्रिंक, पीजा, चॉकलेट के इर्द-गिर्द घूमती है ।

4. आपके विचार से भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता है ?

उत्तर–शिशु अपनी स्वाभाविक आदत के अनुसार अपनी उम्र के बच्चों के साथ खेलने में रूचि लेता है। उनके साथ खेलना अच्छा लगता है। अपनी उम्र के साथ जिस रूचि से खेलता है वह रूचि बड़ों के साथ नहीं होती है। दूसरा कारण मनोवैज्ञानिक भी है–बच्चे को अपने साथियों के बीच सिसकने या रोनक में हीनता का अनुभव होता है। यही कारण है कि भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना भूल जाता है।

5. यहाँ माता-पिता का बच्चे के प्रति जो वात्सल्य व्यक्त हुआ है उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर–पिता का अपने साथ शिशु को नहला-धुलाकर पूजा में बैठा लेना, माथे पर तिलक लगाना फिर कंधे पर बैठाकर गंगा तक ले जाना और लौटते समय पेड़ पर बैठाकर झूला झुलाना कितना मनोहारी दृश्य उत्पन्न करता है ।

पिता के साथ कुश्ती लड़ना, बच्चे के गालों पर चुम्मा लेना, बच्चे के द्वारा मूँछें पकड़ने पर बनावटी रोना रोने का नाटक और शिशु का हँस पड़ना अत्यन्त जीवंत लगता है ।

माँ के द्वारा गोरस, भात, तोता-मैना आदि के नाम पर खिलाना, उबटना, शिशु का श्रृंगार करना और शिशु का सिसकना बच्चों की टोली को देखकर सिसकना बंद कर विविध प्रकार के खेल खेलना और मुसन तिवारी को चिढ़ना आदि अद्‌भुत दृश्य उकेरे गए है। ये सभी दृश्य अपने शैशव की याद दिलाते हैं ।

2. लखनवी अंदाज–यशपाल

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे-दिए गए प्रश्नों के उत्तर छाँटकर लिखिए ।

आराम से सेकेण्ड क्लास में जाने के लिए दाम अधिक लगते हैं। दूर तो जाना नहीं था। भीड़ से बचकर एकांत में नई कहानी के संबंध में सोच सकने और खिड़की से प्राकृतिक दृश्य देख सकने के लिए टिकट सेकेण्ड

3. कवि ने चाँदनी रात की उज्ज्वलता का वर्णन करने के लिए किन-किन उपमानों का प्रयोग किया है ?

उत्तर–कवि ने चाँदनी रात की उज्ज्वलता का वर्णन करने के लिए निम्नलिखित उपमानों का प्रयोग किया है–

स्फटिक शिला का

दही के समुद्र का

दूध के से फेन का ।

देव-पायनि नुपुर मंजु बजै.....

प्रश्न 1. चाँदी रात की सुन्दरता को कवि ने किन-किन रूपों में देखा है ?

उत्तर–कवि ने चाँदनी रात की सुन्दरता को निम्न रूपों में देखा है ।

1. स्फटिक शिलाओं से निर्मित सुधा-मन्दिर रूप में देखा है ।
2. चारों ओर फैलती चाँदनी को दीर्घ रूप समुद्र की तरह देखा है जो चारो ओर उमड़ पड़ रही है ।
3. आँगन में उमड़ते हुए दूध के झाग के रूप में देखा है ।
4. चाँदनी की नायिका के रूप में देखा है जो तारों से सुसज्जित हैं ।
5. अँबर रूपी दर्पण के रूप में चाँदनी को देखा है ।

1. माता का अँचल–शिवपूजन सहाय

1. माँ के प्रति अधिक लगाव न होते हुए भी विपत्ति के समय भोलानाथ माँ के आँचल में ही प्रेम और शान्ति पाता इसका इसका आप क्या कारण मानते हैं ?

उत्तर–यह बात सच है कि बच्चे को अपने पिता से अधिक लगाव था। उसके पिता उसका लालन-पालन ही नहीं करते थे, उसके संग दोस्तों जैसा व्यवहार भी करते थे। परन्तु विपदा के समय उसे लाड़ की जरूरत थी अत्यधिक ममता ओर माँ की गोद की जरूरत थी उसे अपनी माँ से जितनी कोमलता मिल सकती है पिता से नहीं। यही कारण है कि संकट में बच्चे को माँ या नानी की याद आती है बाप या नाना की नहीं। माँ का लाड़ घाव को भरने वाले मरहम का काम करता है ।

2. भोलानाथ और अपने साथियों के खेल और खेलने की सामग्री आपके खेल और खेलने की सामग्री से किस प्रकार भिन्न है ?

उत्तर–आज जमाना बदल चुका है। आज माता पिता अपने बच्चों का बहुत ध्यान रखते हैं वे उसे गली मोहल्ले में बेफिक्र खेलने घूमने की अनुमति नहीं देते । जब से निठारी जैसे कांड होने लगे हैं तब से बच्चे भी डरे-डरे रहने लगे हैं। न तो हुल्लड़बाजी, शरारतें और तुकबन्दियाँ रही हैं न ही नंगधड़ंग घूमते रहने की आजादी

बाहर ते भीतर लौ भीति न दिखैए देव,

दूध को सो फेन फैल्यों आँगन फरसबंद ।

तारा सी तरूनि तामे ठाढी झिलमिलि होति,

आरसी से अंबर में आभा सी उजारी लगै,

प्यारी राधिका को प्रतिबिंब सो लगत चंद ।

प्रश्न :

1. उपर्युक्त पंक्तियों में किसका वर्णन किया गया है ?

उत्तर–उपर्युक्त पंक्तियों में पूर्णिमा की रात में चाँद तारों की आभा से शोभित रात्रि के सौन्दर्य का वर्णन किया गया है ।

2. सुधा मन्दिर किससे बना है ?

उत्तर–सुधा मन्दिर स्फटिक की शिलाओं से बना है ।

3. इस मंदिर को देखकर क्या लग रहा है ?

उत्तर–इस मंदिर को देखकर ऐसा लग रहा है मानो दही का सागर उमंग से उमड़ता चला आ रहा है।

4. बाहर से भीतर लौं भीति क्यों नहीं दिखाई दे रही है ?

उत्तर–बाहर से भीतर लौं भीति दिखाई नहीं देती क्योंकि यह मन्दिर पारदर्शी स्फटिक की शिलाओं व अमृतरूपी चाँदनी से बना हुआ है ।

5. मन्दिर का आँगन कैसा दिखाई दे रहा है ?

उत्तर–मन्दिर का आँगन देखकर लग रहा है मानों दूध का फेन चारों तरफ फैला है ।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर :

1. श्रीकृष्ण को संसार रूपी मन्दिर का दीपक क्यों कहा गया है ?

उत्तर–जिस प्रकार दीपक के प्रकाशित होने से मंदिर में उजाला फैल जाता है । उसी प्रकार कृष्ण के होने से समस्त ब्रज प्रदेश में उमंग आनंद, उल्लास, प्रकाश फैल जाता है। इसी कारण उन्हें संसार रूपी मन्दिर का दीपक कहा गया है।

2. दूसरे कवित्त के आधार पर स्पष्ट करें कि ऋतुराज बसंत के बाल रूप का वर्णन परम्परागत बसंत वर्णन से किस प्रकार भिन्न है ?

उत्तर–परम्परागत बसंत वर्णन में बसंत ऋतु को उद्दीपन के रूप में चित्रित किया जाता है। कवित्त में उसे आलम्बन के रूप में चित्रित किया है। बसंत को बालक के रूप में चित्रित कर उसके हाव भाव क्रियाकलाप आदि को चित्रित किया है जो इसे परम्परागत वर्णनों से भिन्न बनाता है ।

3. बनमाल कहाँ शोभायमान है ?

उत्तर–बनमाल श्रीकृष्ण के गले में अर्थात् हृदय पर शोभायमान है ।

4. कृष्ण जी की मुस्कान कैसी लग रही है ?

उत्तर–कृष्ण की मुस्कान उनके मुखरूपी चन्द्रमा की चाँदनी के समान फैली है।

5. जै जग मन्दिर दीपक किसके लिए प्रयुक्त किया गया है तथा क्यों ?

उत्तर–जै जग मन्दिर दीपक श्रीकृष्ण के लिए प्रयुक्त किया गया है क्यों वे इस संसार रूपी मन्दिर में दीपक के समान प्रकाशमान हैं ।

2. डार द्रुम पलना बिछौना नव पल्लव कें
सुमन झिंगोला सो हैं, तव छवि भारी दै ।
पवन झुलावै केकी कीर बतरावैं देव,
कोकिल हलावै हुलसावै कर तारी दै ।
पुरित पराग सौ, उतारौ करै राई नोन,
कंजकली नीयिका लतानसिंर सारी दैं ।
मदन महीप जु को बालक बसंत ताहि,
प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै ।

प्रश्न :

1. प्रस्तुत पद में किसका चित्रण किया गया है ?

उत्तर–प्रस्तुत पद में वसंत ऋतु का वर्णन किया गया है ।

2. बालक के लिए पालना कहाँ पड़ा है ?

उत्तर–बालक के लिए पालना पेड़ों की डालियों पर पड़ा है ।

3. बालक का बिछौना किसे कहा गया है ?

उत्तर–नई-नई कोमल पत्तियों से उसका बिछौना बना है ।

4. बालक को झूला कौन झुला रही है ?

उत्तर–मंद मादक पवन बालक को झूला झूला रही हैं ।

5. बालक कैसे वस्त्र धारण किए हुए हैं ?

उत्तर–सुन्दर-सुन्दर खुशबूदार फूलों का झिंगोला बालक धारण किए हुए है ।

3. फटिक सिलानी सौं सुधारयौ सुधा मंदिर
उदधि दधि को सो अधिकाई उमगे अमंद ।

6. भ्रमर गीत की विशेषताएँ लिखिए ।

उत्तर–भ्रमरगीत में निर्गुण ब्रह्म का विरोध, सगुण की सराहना वियोग श्रृंगार का मार्मिक चित्रण हैं इसमें गोपियों की स्पष्टता वाकपटुता, सहृदयता, व्यंग्यात्मकता, सराहनीय है। एकनिष्ठ प्रेम, योग का पलायन स्नेहसिक्त उपालंभ अवलोकनीय है।

7. गोपियों का राजधर्म की याद क्यों दिलाना पड़ा ?

उत्तर–प्रेम आदि की पवित्र नीतिपरक बातें कृष्ण भूलकर अनीति पर उतर आए हैं। अत: योग संदेश को भेजकर प्रेम विरुद्ध कार्य कर रहे हैं। इसीलिए राजधर्म की याद दिलाकर प्रेम नीति पर लेने का प्रयास किया ।

8. सूरदास के पढ़े पदों के आधार पर सूरदास की काव्यगत विशेषताएँ बताइए ।

उत्तर–(क) एकनिष्ठ प्रेम, (ख) वाकपटुता (ग) गीत शैली (घ) व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग ।

9. गोपियों के वाक चातुर्य की विशेषताएँ लिखिए ।

उत्तर–स्पष्टता व व्यंग्यात्मक प्रयोग ।

10. योग संदेश का गोपियों पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर–विरहाग्नि बढ़ गई उनका मन दु:खी हो गया। उद्धव को उलाहने देने लगी ।

सवैया–देव

1. पायनि नूपुर मंजु बजैं, कटि किंकिणि कै धुनि की मधुराई
साँवरे अंगलसै पटपीत, हिये हुलसे बनमाल सुहाई ।
माथे किरीट बड़े दृग चंचल, मंद हँसी मुखचंद जुन्हाई ।
जै जग मन्दिर दीपक, सुन्दर श्री ब्रजदूलह देव सहाई ।

प्रश्न :

1. मुखचंद में कौन-सा अलंकार है ?

उत्तर–रूपक अलंकार (मुख और चन्द्रमा में अभेद होने के कारण)

2. कृष्ण ने शरीर पर क्या-क्या धारण किया है ?

उत्तर–पैरों में घुंघरू
कमर में करधनी
देह में पीताम्बर
माथे पर मुकुट
गले मे बनमाल

(ख) योग और गोपियों ने कड़वी ककड़ी क्यों कहा है ?

उत्तर–जिस प्रकार मनुष्य कड़वी ककड़ी को अपने मुंह में एक क्षण के लिए भी नहीं रखता और तुरंत ही उसे त्याग देता है उसी प्रकार गोपियां भी एक क्षण के लिए भी योग को नहीं अपनाना चाहती है ।

(ग) उद्धव गोपियों के लिए किस तरह की व्याधि लेकर आए हैं ?

उत्तर–उद्धव योग रूपी व्याधि लेकर आए हैं । योग रूखा तथा उन्हें कृष्ण से अलग करने वाला है इसलिए वे इसे व्याधि कहती हैं ।

(घ) अनुप्रास अलंकार के दो उदाहरण लिखिए ।

उत्तर–1. हमारे हरि हारिल लकरी ।

2. ज्यौं करूई ककरी ।

लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किससे की गई है ?

उत्तर–उद्धव के व्यवहार की तुलना निम्नलिखित से की गई है–

कमल के पत्ते से जो जल में रहकर भी उससे प्रभावित नहीं होते । जल में पड़ी तेल की बूँद से जो जल में घुलत मिलती रहती है ।

2. गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित है ?

उत्तर–यह व्यंग्य निहित है कि उद्धव कृष्ण के निकट रहकर भी उनके प्रभाव से सर्वथा अछूते हैं उनके मन में अनुराग भाव उत्पन्न नहीं हुआ है। यह स्थिति उद्धव के लिए भाग्यशाली हो सकती है गोपियों के लिए नहीं ।

3. गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने के लिए कही है ?

उत्तर–गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा ऐसे लोगों को देने के लिए कही है जिनके मन चकरी के समान घूमते रहते हैं उन्हें ही योग के द्वारा मन एकाग्र करने की आवश्यकता है ।

4. सूरदास किस मार्ग के समर्थक थे ?

उत्तर–सूरदास सगुण भक्ति मार्ग के समर्थक थे । इस मार्ग में भगवान के साकार रूप की उपासना की जाती है। इसलिए वे अपने पदों में योग मार्ग के विरुद्ध अपनी बात कहते हुए दिखाई पड़ते हैं ।

5. उद्धव गोपियों की मनोदशा क्यों नहीं समझ सके ?

उत्तर–उद्धव को निर्गुण ज्ञान पर अभिमान था। ज्ञान के दर्प में वे गोपियों के आदर्श प्रेम को नहीं समझ पाए ।

चाहति हुति गुहारि जिताहिं तैं उत तै धार बही ।

सूरदास अब धीर धरहीं क्यौं मरजादा न ।

(क) अनुप्रास अलंकार का उदाहरण छांटकर लिखिए ।

उत्तर–मन की मन नहीं मांझ रहीं

कहिए जाए कौन पै उघौं नाहीं परत कही ।

अवधि अधार आस आवन की तन मन बिथ सही ।

अब इस जोग संदेसनि सुनि सुनि बिरहिनि बिरह दहीं ।

(ख) सुनि सुनि में कौन सा अलंकार है ?

उत्तर–पुनुरूक्ति अलंकार ।

(ग) गोपियां अब धैय धरने को तैयार क्यों नहीं है ?

उत्तर–गोपियां कहती हैं कि कृष्ण ने ही अपनी मर्यादा नहीं रखी तो वे अब किसके सहारे धैर्य धारण करें । जिस पर हमें विश्वास था उसी ने हमें धोखा दे दिया ।

(घ) उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की बिरहाग्नि में घी का काम कैसे किया?

उत्तर–गोपियों के मन में कृष्ण के आगमन की आशा विद्यमान थी इसी के बल पर वह वियोग की वेदना सह रही थी पर उद्धव के संदेश ने उस आशा को नष्ट कर दिया जिससे उनका रहा सहा धैर्य भी जाता रहा और उनकी विरह व्यथा और भी बढ़ गई ।

(ङ) गोपियों के मन की बात मन में ही क्यों रह गई ?

उत्तर–कृष्ण स्वयं नहीं आए उद्धव को भेजा, उद्धव ने उनके दुख को समझा नहीं योग संदेश दे दिया।

3. हमारै हरि हारिल की लकरी ।

मन क्रम वचन नंद नंदन उर यह दृढ़ करि पकरि ।

जागत सोवत स्वप्न दिवस निसि कान्ह कानह जकरी ।

सुनत जोग लागत है ऐसौ ज्यौं करूई ककरी ।

सु तौ व्याधि हमकौं लै आए देखी सुनी न करी ।

यह तौ सूर तिनहिं लै सौंपौ जिनके मन चकरी ।

(क) कृष्ण को हारिल की लकड़ी क्यों कहा गया है ?

उत्तर–हारिल पक्षी की विशेषता होती है कि वह दिन रात अपने पंजों में एक लकड़ी को थामे रहता है उसे कभी नहीं छोड़ता। इसी प्रकार गोपियां दिन रात कृष्ण को अपने मन में बसाए हुए है । वे किसी भी सूरत में उन्हें नहीं भूलती है।

पर लादकर पहले चार कोस दूर कबीर के दरबार में ले जाते और वहां प्रसाद स्वरूप जो कुछ मिलता उसी से गुजर करते। कबीर पर भगत की श्रद्धा का संभवत: यही कारण रहा होगा कि भगत के विचार कबीर के शिक्षाओं से मिलते होंगे और इन्हें इनमें आनंद मिलता होगा। भगत भी कबीर की भाँति ही परमात्मा में विश्वास रखते थे। इसलिए कबीर के विचारों पर उनकी अगाध श्रद्धा थी ।

पद–सूरदास

निम्नलिखित पद को पढ़कर पूछे गए प्रश्न के उत्तर लिखिए ।

1. उधौ तुम हों अति बडभागी ।

अपरस सहत सनेह तगा तैं नाहिन मन अनुरागी ।

पुरइनि पात रहत जल भीतर ता रस देह न दागी ।

ज्यौ जल मांहतेल की गागरि बूंद न ताकौं लागी ।

प्रीति नदी में पाऊँ, बोरयों दृष्टि न रूप परागी ।

सूरदास अबला हम भारी गुर चींटी ज्यौं पागी

(क) गोपियाँ उद्धव को भगवान क्यों कहती है ?

उत्तर–अनुराग न होने के कारण उन्हें किसी की विरह वेदना नहीं झेलनी पड़ी ।

(ख) उद्धव के व्यवहार की तुलना किस किससे की गई है ?

उत्तर–उद्धा के व्यापार के व्यवहार की तुलना पानी में पड़े रहने वाले कमल के पत्ते से की गई है । जल में पड़ी तेल की गागर से की गई है ।

(ग) गुर चाँटी ज्यौं पागी में कौन किसका प्रतीक है ?

उत्तर–गुड़ कृष्ण का चीटियाँ गोपियों की ।

(घ) प्रस्तुत पद में रूपक एवं उत्प्रेक्षा अलंकार छाँटकर लिखिए ।

उत्तर–प्रीति नदी–रूपक/ज्यों जल मांह–उत्प्रेक्षा/गुर चाँटी ज्यौं पागी–उत्प्रेक्षा

(ङ) इस पद में गोपियाँ अप्रत्यक्ष रूप से उद्धव से क्या कहना चाहती है ?

उत्तर–उद्धव तुम ज्ञानी हो नीतिज्ञ हो किन्तु तुम्हारे समान भाग्यहीन कोई नहीं है क्योंकि प्रेम के सागर कृष्ण के पास रहकर भी तुम प्रेम से विमुख है ।

2. मन की मन नहीं मांझ रहीं

कहिए जाए कौन पै उघौ नाहीं परत कही ।

अवधि अधार आस आवन की, तन मन बिथा सही ।

अब इस जोग संदेसनि सुनि सुनि बिरहिनि बिरह दहीं ।

4. उनका कंठ स्वर एक-एक शब्द को संगीत के जीने पर चढ़ाकर कहाँ भेज रहा है ?

(क) स्वर्ग की ओर (ख) गांव के लोगों के कान की ओर

(ग) ईश्वर की ओर (घ) (क) और (ख) दोनों

5. मुग्ध का अर्थ है :

(क) गुमसुम (ख) उदास

(ग) परेशान (घ) प्रसन्न

उत्तर–1 (घ) 2. (ग) 3. (ख) 4. (घ) 5. (घ)

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (2 अंक)

1. बालगोबिन भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी ?

उत्तर– भगत की पुत्रवधु जानती थी कि भगत जी संसार में अकेले हैं। उनका एकमात्र पुत्र मर चुका है वे बूढ़े हैं और भक्त हैं। उन्हें घर बार और संसार में कोई रूचि नहीं है। अत: वे अपने खाने पीने और स्वास्थ्य की ओर भी ध्यान नहीं दे पायेंगे। इसलिए वह सेवा भाव से उनके चरणों में अपने दिन बिताना चाहती थी । वह उनके लिए भोजन और दवा का प्रबंध करना चाहती थी।

2. बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण क्यों थी ?

उत्तर–बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों को हैरान कर देती थी। वे भगत जी की सरलता, सादगी और निस्वार्थता पर हैरान होते थे। भगत जी भूलकर भी किसी से कुछ नहीं लेते थे। वे बिना पूछे किसी भी चीज को छूते भी नहीं थे। यहां तक कि किसी दूसरे के खेत में शौच भी नहीं करते थे। लोग उनके इस व्यवहार पर मुग्ध थे। लोग भगत जी पर तब और भी आश्चर्य करते थे जब वे भोरकाल में उठकर दो तीन मील दूर स्थित नदी में स्नान कर आते थे। वापसी पर वे गांव के बाहर स्थित पोखर के किनारे प्रभु भक्ति के गीत टेरा करते थे । उनके इन प्रभावी गानों को सुनकर लोग सचमुच हैरान रह जाते थे ।

3. गांव का सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश आषाढ़ चढ़ते ही उल्लास से क्यों भर जाता है ?

उत्तर–भारत कृषि प्रधान देश है । यहाँ के गांव कृषि पर आधारित है। कृषि वर्षा पर आधारित है । वर्षा आषाढ़ मास में शुरू होती है। इसलिए आषाढ़ मास में गांव वासी बहुत प्रसन्न नजर आते हैं। वे साल भर आषाढ़ मास की प्रतीक्षा करते हैं। ताकि खेतों में धान रोप सकें उन दिनों बच्चे भी खेतों की गीली मिट्टी में लथपथ होकर आनंद क्रीड़ा करते हैं। किसान हल जोतते हैं तथा दिन भर बुवाई करते हैं। सांस्कृतिक रंगों से ओत-प्रोत हो उठता है ।

4. बालगोबिन भगत की कबीर पर श्रद्धा किन-किन रूपों में प्रकट हुई है ?

उत्तर–बालगोबिन भगत की कबीर पर अगाध श्रद्धा थी । वे कबीर को अपना साहब मानते थे और उन्हीं की दी गई शिक्षाओं को पालन करते थे। उनका सब कुछ साहब का था। खेत में जो फसल होती उसे सिर

3. बालगोबिन का स्वभाव कैसा था ?

(क) झगड़ालू (ख) सरल

(ग) सनकी (घ) मस्त

4. लोगों को कौतूहल क्यों होता था ?

(क) भगत जैसे साधु को खेतीबारी करते देखकर (ख) भगत की गृहस्थी देख

(ग) उनके सच्चाई देखकर (घ) नियमों का अत्यन्त बारीकी से पालन करते देख

5. दो टूक का तात्पर्य है :

(क) थोड़ी सी (ख) संकोच से

(ग) साफ-साफ (घ) गुस्से से

उत्तर–1. (ग) 2. (ख) 3. (ख) 4. (घ) 5. (ग)

3. कबीर के वे सीधे-सादे पद जो उनके कंठ से निकल कर सजीव हो उठते । आशाढ़ की रिमझिम है। समूचा गाँव खेतों में उतर पड़ा है। कहीं हलचल रहे हैं कहीं रोपनी हो रही है। धान के पानी भरे खेतों में बच्चे उछल रहे हैं। औरतें कलेवा लेकर मेड़ पर बैठी है। आसमान बादल से घिरा धूप का नाम नहीं ठंडी पुरवाई चल रही है। ऐसे ही समय आपके कानों में एक स्वर-तरंग झंकार सी कर उठी। यह क्या है–यह कौन हैं यह पूछना न पड़ेगा। बाल गोबिन भगत समूचा शरीर कीचड़ में लिथड़े अपने खेत में रोपनी कर रहे हैं। उनकी अंगुली एक-एक धानके पीछे को पंक्तिबद्ध खेत में बिठा रही है। उनका कंठ एक-एक शब्द को संगीत के जीने पर चढ़ाकर कुछ को ऊपर स्वर्ग की ओर भेज रहा है और कुछ को इस पृथ्वी की मिट्टी पर खड़े लोगों के कान की ओर ।

1. हल चलाकर रोपनी का काम किस महीने में हो रहा है ?

(क) फाल्गुन (ख) माघ

(ग) कार्तिक (घ) आषाढ़

2. बालगोबिन भगत किसके पद गाया करते थे ?

(क) तुलसीदास के (ख) कबीर के

(ग) सूर के (घ) अपने

3. बालगोबिन भगत अपने खेत में क्या कर रहे हैं ?

(क) हल चला रहे हैं (ख) रोपनी करते हुए गा रहे हैं

(ग) खाली खड़े हैं (घ) धान अबेर रहे हैं

3. कैप्टन मूर्ति का चश्मा बार-बार क्यों बदल देता था ?

उत्तर–सुभाष चन्द्र बोस की मूर्ति पर चश्मा नहीं था। इसी कमी की पूर्ति चश्मेवाला कैप्टन किया करता था। वह चश्मे बेचा करता था। अत: वह कोई-कोई चश्मा नेताजी की आँखों पर लगा देता था। अगर कोई ग्राहक मूर्ति पर लगा फ्रेम मांग लेता तो कैप्टन वह फ्रेम उतारकर उसकी जगह कोइ अन्यश फ्रेम लगा देता था। इस प्रकार मूर्ति पर चश्मे बदलते रहते थे।

4. नेताजी का चश्मा पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि देशप्रेम किस तरह प्रकट होता है ?

उत्तर–देशप्रेम प्रकट करने के लिए बड़े-बड़े नारों की आवश्यकता नहीं है। न ही जवान बलिष्ठ या सैनिक होने की जरूरत है। देशप्रेम तो छोटी-छोटी बातों से प्रकट हो सकता है। यदि हमारे मन में देश के प्रति प्रेम है तो हम देश की हर छोटी से छोटी कमी को पूरा करने के लिए प्रयत्न कर सकते हैं। नेताजी का चश्मा में कैप्टन ने नेताजी की मूर्ति पर चश्मा लगाकर ही अपनी भावना का परिचय दे दिया ।

11. बालगोबिन भगत–रामवृक्ष बेनीपुरी

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर के विकल्प में से सही छांटकर लिखिए ।

1. बालगोबिन भगत साधु थे । साधु की सब परिभाषाओं में खरे उतरने वाले । कबीर को 'साहब' मानते थे उन्हीं के गीतों को गाते उन्हीं के आदेशों पर चलते । कभी झूठ नहीं बोलते, खरा व्यवहार रखते । किसी से भी दो-टूक बात करने में संकोच नहीं करते, न किसी से खामखाह झगड़ा मोल लेते। किसी की चीज नहीं छूते न बिना पूछे व्यवहार में लाते । इस नियम को कभी-कभी इतनी बारीकी तक ले जाते कि लोगों को कुतूहल होता । कभी वह दूसरे के खेत में शौच के लिए भी नहीं बैठते । वह गृहस्थ थे लेकिन उनकी सब चीज 'साहब' की थी। जो कुछ खेत में पैदा होता सिर पर लादकर पहले उसे साहब के दरबार में ले जाते जो उनके घर से चार कोस दूर पर था एक कबीर पंथी मठ से मतलब वह दरबार में भेंट स्वरूप रख लिया जाकर 'प्रसाद' के रूप में जो उन्हें मिलता, उसे घर लाते और उसी से गुजर चलाते ।

1. बालगोबिन भगत का व्यवसाय था :

(क) भक्ति (ख) गायन

(ग) खेतीबारी (घ) साधु

2. बालगोबिन अपनी फसलें किसके दरबार में ले जाते थे ?

(क) कबीर के (ख) कबीर पंथी मठ में

(ग) ईश्वर के (घ) हाकिम के

(ग) नेताजी का चश्मा बार-बार बदलता क्यों है ?

(घ) नेताजी की मूर्ति के साथ कौन छेड़खानी करता है

2. चश्मे वाला नेताजी की मूर्ति पर चश्मा क्यों लगा देता है ?

(क) नेताजी के कारण (ख) चश्मे के विज्ञापन के कारण

(ग) अपने नेताजी के प्रति सम्मान के कारण (घ) लोगों का मन रखने के लिए

3. चश्मे वाले को नेताजी की बगैर चश्मेवाली मूर्ति बुरी क्यों लगती है ?

(क) देशभक्ति के कारण (ख) सौन्दर्य के कारण

(ग) खालीपन के कारण (घ) नगरपालिका की कोताही के कारण

4. वाह क्या खूब आइडिया है यह विचार किसके मन में आया ?

(क) जनता के (ख) देशवासियों के

(ग) लेखक के (घ) हालदार के

5. आहत का अर्थ है :

(क) घायल (ख) चोटग्रस्त

(ग) व्यथित (घ) परेशान

उत्तर– 1. (ग) 2. 9ग) 3. (क) 4. (घ) 5. (ग)

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर :

1. पानवाले का एक रेखांकित कीजिए ।

उत्तर–पानवाला स्वभाव से बहुत ही रसिया हंसोड़ और मजाकिया था। वह शरीर से मोटा था। उसकी तोंद निकली रहती थी। उसके मुंह में पान ठूंसा रहता था। पान के कारण वह ठीक से बात तक नहीं कर पाता था और हंसने पर उसके लाल काले दांत खिल उठते थे। वह बातें बनाने में उस्ताद था। उसकी बोली में हंसी और व्यंग्य का पुट बना रहता था ।

2. जब तक हालदार साहब ने कैप्टन को साक्षात् देखा नहीं था। तब तक उनके मानस पटल पर उसका कौन सा चित्र रहा होग, अपनी कल्पना से लिखिए ।

उत्तर–जब तक हालदार साहब ने अपनी आँखें से चश्मे कैप्टन को देखा नहीं था तब तक उनके मन में कैप्टन की मूर्ति कुछ और थी उन्होंने सोचा था कि कैप्टन शरीर से हट्टा-कट्टा मजबूत होगा। वह जरूर सिर पर फौजी टोपी पहनता होगा। वह रौबदार अनुशासित और दबंग मनुष्य होगा। उसकी वाणी में भारीपन होगा।

हो गए। मूर्ति की आँखों पर सरकंडे से बना छोआ-सा चश्मा रखा हुआ था, जैसा बच्चे बना लेते हैं। हालदार साहब भावु हैं। इतनी सी बात पर उनकी आँखें भर आई ।

(क) हालदार साहब स्वभाव में :

1. सनकी थे
2. पागल हैं
3. प्रेमी भावुक हैं
4. भावुक देशभक्त हैं

(ख) लोगों ने किसकी हंसी उड़ाई थी ?

1. हालदार की
2. पानवाले की
3. लेखक की
4. चश्मेवाले की

(ग) हालदार साहब ने कस्बे से गुजरते हुए आदतन क्या देखा ?

1. पानवाले को
2. चौराहे को
3. नेताजी की मूर्ति को
4. कैप्टन को

(घ) सुभाष की मूर्ति को देखकर उनकी आंखों क्यों भर आई ?

1. पानवाले ने चश्मा लगा दिया था ।
2. कैप्टन अपना काम चायवाले को सौंप गया था ।
3. बच्चों के हाथों से बना सरकंडे का चश्मा मूर्ति पर लगा था
4. उपर्युक्त में से कोई नहीं

(ङ) होम देने का अर्थ है ?

1. घर देना
2. पूजा देना
3. बलिदान देना
4. नष्ट कराना

उत्तर-(क) 4 (ख) 3 (ग) 3 (घ) 3 (ङ) 3

3. अब हालदार साहब को बात कुछ-कुछ समझ में आई एक चश्मेवाला है जिसका नाम कैप्टन है। उसे नेताजी की बगै चश्मेवाली मूर्ति बुरी लगती है। बल्कि आहत करती है मानो चश्मे के बगैर नेताजी को असुविध ा हो रही हो। इसलिए वह अपनी छोटी सी दुकान में उपलब्ध गिने-चुने फ्रेमों में से एक नेताजी की मूर्ति पर फिट कर देता है। लेकिन जब कोई ग्राहक आता है और उसे वैसे ही फ्रेम की दरकार होती है जैसा मूर्ति पर लगा है तो कैप्टन चश्मेवाला मूर्ति पर लगा फ्रेम सम्भवत: नेताजी से क्षमा माँगते हुए लाकर ग्राहक को दे देता है और बाद में नेताजी को दूसरा फ्रेम लौटा देता । वाह ! भई खूब ! क्या आइडिया है ।

1. हालदार साहब को पहले कौन-सी बात समझ में नहीं आती है ?

(क) नेताजी का चश्मा क्यों नहीं है ?
(ख) नेताजी का चश्मा किसने उतार लिया ?

बारे में और बात करने को तैयार नहीं ड्राइवर भी बेचैन हो रहा था। काम भी था। हालदार साहब जीप में बैठकर चले गए ।

(क) कैप्टन का मजाक किसने उड़ाया और बुरा किसे लगा ?

1. चाय वाले ने और ड्राइवर को
2. पानेवाले ने और हालदार साहब को
3. पानवाले ने और ड्राइवर को
4. चाय वाले ने और हालदार साहब को

(ख) सामने से आते हुए व्यक्ति का रूप कैसा था ?

1. बेहद बूढ़ा मरियल सा
2. सिर पर गांधी टोपी और आंखों पर काला चश्मा लगाए
3. हाथ में छोटी संदूकची और बांस पर टंगे चश्मे
4. उपयुक्त सभी

(ग) वह चश्मे किस तरह बेचता था ?

1. दुकान लगाकर
2. घर घर
3. फेरी लगाकर
4. उपर्युक्त में से कोई नहीं

(घ) उस बूढ़े व्यक्ति का नाम कैप्टन क्यों रखा गया था ?

1. उसका मजाक उड़ाने के लिए
2. वह फौज में था
3. माता पिता ने यही नाम रखा था
4. देशभक्ति भावना के कारण

(ङ) हालदार साहब पान वाले से क्या पूछना चाहते थे ?

1. कैप्टन के नाम के बारे में
2. वस्ती के बारे में
3. कैप्टन के काम के बारे में

उत्तर–(क) 2 (ख) 4 (ग) 3 (घ) 4 (ङ) 2

2. बार-बार सोचते क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर गृहस्थी जवानी जिन्दगी सब कुछ होमकर देनेवालों पर भी हंसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है। दुखी हो गए। पन्द्रह दिन बाद फिर उसी कस्बे से गुजरे। कस्बे में घुसने से पहले ही खयाल आया कि कस्बे की हृदयस्थली में सुभाष की प्रतिमा अवश्य ही प्रतिष्ठापित होगी लेकिन सुभाष की आंखों पर चश्मा नहीं होगा। क्योंकि मास्टर बनाना भूल गया। और कैप्टन मर गया। सोचा वहाँ रूकेंगे नहीं, पानी भी नहीं खाएँगे। मूर्ति की तरफ देखेंगे भी नहीं सीधे निकल जाएंगे ड्राइवर से कह दिया चौाहे पर रूकना नहीं आज बहुत काम है पान आगे कहीं खा लेंगे । लेकिन आदत से मजबूत आँखें चौराह आते ही मूर्ति की तरफ उठ गई। कुछ ऐसा देखा कि चीखें रोको । जीप स्पीड में थी। ड्राइवर ने जोर से ब्रेक मारे। रास्ता चलते लोग देखने लगे। जीप रूकते-न-रूकते हालदार साहब जीप से कूदकर तेज तेज कदमों से मूत्रि की तरफ लपके और उसके ठीक सामने जाकर अटेंशन में खड़े

6. भय	भयानक
7. जुगुप्सा	वीभत्स
8. विस्मय	अद्‌भुत
9. निर्वेद	शांत

सार लेखन

सार लेख क्या है ?

'सार' शब्द का अर्थ है–तत्व या निचोड़ । अर्थात् किसी गद्यांश को इस प्रकार संक्षेप में लिखना, जिससे कि उसका मूल भाव या मूल विचार छूटने न पाए तथा कम महत्वपूर्ण अंश को छोड़ दिया जाए ।

अच्छा सार–लेखन कैसे करें ?

सार-लेखन करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए–

1. दिए गए गद्यांश को अत्यन्त सावधानीपूर्वक पढ़ना चाहिए ताकि उसका भावसमझ में आ जाए ।

2. जो अंश, वाक्यों अथवा महत्वपूर्ण लगे उन्हें रेखांकित कर लेना चाहिए ।

3. सार लेखन करते समय गद्यांश में आए मुहावरे, सूक्तियों और कहावतों को छोड़ देना चाहिए ।

4. सार-लेखन करते समय अपनी तरफ से कुछ भी नहीं जोड़ना चाहिए ।

5. सा-लेखन में पुनरूक्ति नहीं करनी चाहिए ।

6. यह ध्यान रखना चाहिए कि कोई महत्वपूर्ण अंश या विचार न छूटने पाए ।

7. सार-लेखन में विचारों की क्रमबद्धता, पूर्णता तथा स्पष्टता उसी प्रकार रखना चाहिए जैसा पूर्ण गद्यांश में दिया गया हो ।

8. अंत में इसे एक बार अवश्य पढ़ लिया जाना चाहिए, जिससे कुछ छूटा हो तो उसे लिखा जा सके।

9. सार-लेखन मूल गद्यांश के तिहाई अंश में करना चाहिए ।

10. नेताजी का चश्मा–स्वयं प्रकाश

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों से सही विकल्प छाँटकर लिखिए–

1. हालदार साहब को पानवाले द्वारा एक देशभक्त का इस तरह मजाक उड़ाया जाना अच्छा नहीं लगा। मुड़कर देखा तो अवाक रह गए। एक बेहद बूढ़ा मरियल सा लँगड़ा आदमी सिर पर गांधी टोपी और आंखों पर काला चश्मा लगाए एक हाथ में एक छोटी सी संदूकची और दूसरे हाथ में एक बांस में टंगे बहुत से चश्मे लिए अभी अभी एक गली से निकला था और अब एक बंद दुकान के सहारे अपना बांस टिका रहा था। तो इस बेचारे की दुकान भी नहीं। फेरी लगाता है। हालदार साहब चक्कर में पड़ गए। पूछना चाहते थे इसे कैप्टन क्यों कहते हैं ? क्या यही इसका वास्तविक नाम है ? लेकिन पानवाले ने साफ बता दिया था कि अब वह इस

धीरे–धीरे खिसक चुके थे सारे श्रोता ।

कह काका सम्मेलन में सन्नाटा छाया,

श्रोताओं में केवल हमको बैठा पाया ।

6. रौद्र रस

श्रीकृष्ण के सुन वचन अर्जुन क्षोभ से जलने लगे ।

सब शील अपना भूलकर करतल युगल मलने लगे ।

संसार देखे अब हमारे शत्रु रण में मृत पड़े ।

करते हुए यह घोषणा वे हो गये उठकर खड़े ।

7. वीभत्स रस

कोउ अँतड़िन को पटिरि माल इतरात दिखावत ।

काउ चरवी लै चोप सहित निज अंगनि लावत ।

8. भयानक रस

शंका, चिन्ता मोट, आवेग, त्रास, दीनता आदि ।

इत सुरसरि को धाम धमकि त्रिभुवन मय पागे

सकल सुरासुर निकल बिलोकन आतुर लागें ।

9. शांत रस

मैं समझयों निरधार, यह जब काचों काँच सो ।

एक रूप अपार प्रतिबिंबित लखियत जहाँ ।।–बिहारी

10. वात्सल्य रस

मैया मोरि मैं नहि माखन खायो

ग्वाल–बाल सब मेरे देरे पेरे है बरबस मुख लपटायौ । –सूरदास

स्थायी भावों की संख्या नौ है तथा इनके अनुसार ही रसों की संख्या भी नौ है ।

स्थायी भाव	**रस**
1. रति	श्रृंगार
2. हास	हास्य
3. शोक	करुणा
4. क्रोध	रौद्र
5. उत्साह	वीर

रस के उपकरण–

1. स्थायी भाव

2. विभाव (क) आलम्बन (ख) उद्दीपन

3. अनुभाव

4. संचारी भाव

रसों का परिचय

1. शृंगार रस–(क) संयोग (ख) वियोग

(क) संयोग उदाहरण–कहत नटत रीझत खिझत मिलत खिलत लजियात ।

भरे भौन में करत हैं नैनन ही सो बात ।।

(ख) वियोग : नयनों को रोने दे, मन ! तू संकीर्ण न बन प्रिय बैठे हैं आँखों से ओझल हो गये नहीं वे कहीं यहीं बैठे हैं ।

2. रस

''आज काल के भी विरुद्ध है

युद्ध-युद्ध बस मेरा युद्धा है–मै. श. गुप्ता

करुण रस

3. लोटते थे भरत सुध-हीन,

पितृ–चिता के पाठ तल में लीन । मै. श. गुप्ता

4. अद्‌भुत रस

यह देख, गगन मुझमें लय है,

यह देख पवन मुझमें लय है,

मुझमें विलीन झंकार सकल,

मुझमें लय है, संसार सकल ।

अमरत्व फूलता है मुझ में

संहार झूलता है मुझमें । – रा. सि. दिनकर

5. हास्य रस

तंबूरा ले मंच पर बैठे प्रेम प्रताप,

साज मिले पन्द्रह मिनट, घंटा भर आलाप ।

घंटा भर आलाप, राग में मारा गोता,

5. अपना काम देखो या शांत बैठे रहो ।

6. जो पत्र मिला है, उसे शीला ने लिखा होगा ।

7. आस्ट्रेलिया से आए हुए खिलाड़ियों को प्रथम तल पर ठहराया गया है ।

8. मैं उसके पास जा रहा हूँ ताकि कुछ योजना बन सके ।

9. आपकी वह कुर्सी कहाँ है, जो आप कलकत्ता से लाए थे ।

10. हमारे मित्र कल यहाँ से जाएँगे ओर आगरा पहुँच कर ताजमहल देखेंगे ।

उत्तर संकेत–(1) ग, (2) घ, (3) घ, (4) ख, (5) ख, (6) ख, (7) ग, (8) क, (9) घ, (10) क, (11) ग, (12) क, (13) ख, (14) घ (दो) (15) क

(16) (1) मिश्र वाक्य (2) मिश्र वाक्य (3) सरल वाक्य (4) मिश्र वाक्य (5) संयुक्त वाक्य (6) मिश्र वाक्य (7) साधारण वाक्य (8) मिश्र वाक्य (9) मिश्र वाक्य (10) संयुक्त वाक्य

अभ्यास प्रश्न :

1. रचना के आधार पर वाक्य का सही प्रकार लिखिए :

   1. वह पुस्तक खरीदने के लिए दुकान पर गया ।

   2. वह बाजार गया और फल खरीदकर लाया ।

   3. उस बालक को बुलाओ, जिसने गिलास तोड़ा है ।

   4. गीता नृत्य कर रही है ।

   5. गुरुजी ने कहा कि कल छुट्टी रहेगी ।

2. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

   1. माता जी ने आटा गूँथकर रोटी बनाई । (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

   2. अचानक पुलिस आ गयी और गली में सन्नाटा छा गया । (सरल वाक्य में बदलिए)

   3. सूरज ने कपड़े पहने, पर वह संतुष्ट नहीं है । (मिश्र वाक्य में बदलिए)

रस-4 अंक

रस काव्य की आत्मा है अर्थात् रसयुक्त रचना को काव्य कहते हैं । रस का अर्थ है आनन्द तात्पर्य कि जिस रचना को पढ़कर आनन्द प्राप्त हो वह काव्य है ।

रस की निष्पत्ति (अनुभूति) कैसे होती है, इस विषय में 'नाट्य शास्त्र' नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ के रचयिता भरत मुनि ने कहा है–

निभावानुभावष्यमिचारि संयोगाद्रस–निष्पत्तिः ।

विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी संचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है ।

9. रेखा ज्योंहि घर पहुँची वर्षा शुरू हो गई ।

(क) संज्ञा आश्रित वाक्य (ख) विशेषण आश्रित उपवाक्य

(ग) समानधिकरण उपवाक्य (घ) क्रिया-विशेषण उपवाक्य

10. मैंने खाना नहीं खाया, इसलिए फल नहीं खाया । यह नचना की दृष्टि से वाक्य का प्रकार है :

(क) जटिल वाक्य (ख) संकेतवाचक वाक्य

(ग) साधारण वाक्य (घ) संयुक्त वाक्य

11. कल मुझे दिल्ली जाना है और फिर कलकत्ता । रचना की दृष्टि से वाक्य है :

(क) मिश्र वाक्य (ख) सरल वाक्य

(ग) संयुक्त वाक्य (घ) इनमें से कोई नहीं

12. कालवायी क्रिया-विशेषण (आश्रित) उपवाक्य किस वाक्य में है :

(क) जब आपका आदमी आया, मैं नहा रहा था (ख) जैसा वह गाती है, कोई नहीं गा सकता।

(ग) तुम जितना जानते हो, उतना काम करो (घ) यदि मेरी बात मानोगे तो सुखी रहोगी

13. वाक्य का सही अर्थ तभी निकलता है जब अंश एक समुचित समय सीमा में ही बोले जाएँ । इस शर्त को कहते हैं :

(क) योग्यता (ख) संविधि

(ग) आकांक्षा (घ) पदक्रम

14. वाकय के प्रमुख घटक हैं :

(क) चार (ख) तीन

(ग) पाँच (घ) इनमें से कोई नहीं

15. वे वहाँ जाकर भाषण देंगे–इसका संयुक्त वाक्या में स्थानान्तरण होगा :

(क) वे वहाँ जाएँगे और भाषण देंगे (ख) वे यहाँ से जाकर भाषण देने लगेंगे

(ग) यहाँ से वहाँ जाकर भाषण देंगे (घ) वे वहाँ जाएँगे या भाषण देंगे

16. नीचे लिखे वाक्यों में कुछ साधारण वाक्य, कुछ मिश्रित वाक्य और कुछ संयुक्त वाक्य हैं । सामने कोष्ठकों में उनके ठीक-ठीक नाम लिखिए।

1. जो विद्यान होता है, उसे सभी आदर करते हैं ।
2. मैं चाहता हूँ कि तुम परिश्रम करो ।
3. वह आदमी पागल हो गया है ।
4. जब राजा नगर में आया, तब उत्सव मनाया गया ।

3. सरल वाक्य–गड्ढा खोदकर मजदूर चले गए ।

संयुक्त वाक्य–जब मजदूरों ने गड्ढा खोद लिया, तब चले गए ।

मिश्र वाक्य–मजदूरों ने गड्ढा खोदा और चले गए ।

प्रश्न :

1. सीमा यहाँ आई और रेखा बाहर गई । रचना के आधार पर सही वाक्य भेद है ।

(क) सरल वाक्य (ख) मिश्र वाक्य

(ग) संयुक्त वाक्य (घ) संज्ञा उपवाक्य

2. उद्देश्य में सम्मिलित नहीं है :

(क) कर्ता का विस्तार (ख) कर्ता

(ग) जिसके बारे में कहा जाए (घ) कर्म का विस्तार

3. विधेय के अंतर्गत नहीं आता :

(क) पूरक (ख) कर्म

(ग) क्रिया का विस्तार (घ) जिसके बारे में कहा जाए

4. सरल वाक्य में नहीं होता :

(क) एक मुख्य क्रिया (ख) एक कर्ता

(ग) एक विधेय (घ) एक या एक से अधिक कर्ता

5. रचना की दृष्टि से वाक्य भेद है :

(क) दो (ख) तीन

(ग) चार (घ) पाँच

6. समानाधिकरण उपवाक्य होते हैं :

(क) सरल वाक्य में (ख) संयुक्त वाक्य में

(ग) जटिल वाक्य में (घ) इनमें से कोई नहीं

7. एक प्रधान उपवाक्य और एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं :

(क) संयुक्त वाक्य में (ख) विशेषण वाक्य में

(ग) मिश्र वाक्य में (घ) लघु वाक्य में

8. स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होने वाला उपवाक्य होता है :

(क) सरल वाक्य (ख) संज्ञा उपवाक्य

(ग) जटिल वाक्य (घ) विशेषण उपवाक्य

2. जहाँ-जहाँ हम गए, हमारा स्वागत हुआ ।

क्रिया-विशेषण उपवाक्य पाँच प्रकार के होते हैं–

(क) कालवाचक उपवाक्य

1. ज्योंहि मैं स्टेशन पहुँचा, गाड़ी ने सीटी बजा दी ।
2. जब मैं घर पहुँचा तो वर्षा हो रही थी ।

(ख) स्थानवाचक उपवाक्य

1. जहाँ तुम पढ़ते थे, मेरा भाई भी वहीं पढ़ता था ।
2. तुम जिधर जा रहे हो, उधर आगे रास्ता बंद है ।
3. वहाँ इस वर्ष अकाल पड़ सकता है, जहाँ वर्षा नहीं हुई ।

(ग) रीतिवाचक उपवाक्य

1. आपको वैसा ही करना है, जैसा मैं कहता हूँ ।
2. वह उसी तरह खेलेगा, जैसा उसने सीखा है ।

(घ) परिमाणवाचक उपवाक्य

1. जितना तुम पढ़ोगे, उतना समझ आएगा ।
2. वह उतना ही अधिक थकेगा, जितना अधिक दौड़ेगा ।
3. जैसे-जैसे आमदनी बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे आवश्यकताएँ बढ़ती जाती है ।

(ङ) परिणाम (कार्य-कारण) वाची उपवाक्य :

1. वह आएगा जरूर क्योंकि उसको नौकरी की जरूरत है ।
2. यदि वह आएगा तो काम बन जाएगा ।
3. यद्यपि तू पहलवान है, तथापि (फिर भी) मुझसे नहीं जीत सकता ।

वाक्य रूपान्तरण :

1. सरल वाक्य–मोहन हिन्दी पढ़ने के लिए शास्त्री जी के यहाँ गया है ।

   संयुक्त वाक्य–मोहन को हिन्दी पढ़ना है और वह शास्त्री जी के यहाँ गया है ।

   संयुक्त वाक्य–मोहन को हिन्दी पढ़ना है अतः वह शास्त्री जी के यहाँ गया है ।

   मिश्र वाक्य–मोहन शास्त्री जी के यहाँ गया है, क्यों उसे हिन्दी पढ़ना है ।
2. सरल वाक्य–मोहन बहुत खिलाड़ी होने पर भी कभी अनुत्तीर्ण नहीं होता ।

   संयुक्त वाक्य–मोहन बहुत खिलाड़ी है, किन्तु कभी अनुत्तीर्ण नहीं होता ।

   मिश्र वाक्य–यद्यपि मोहन बहुत खिलाड़ी है फिर भी कभी अनुत्तीर्ण नहीं होता ।

(क) संज्ञा उपवाक्य

(ख) विशेषण उपवाक्य

(ग) क्रिया-विशेषण उपवाक्य

(क) **संज्ञा उपवाक्य**–प्रधान उपवाक्य की किसी संज्ञा या संज्ञा पदबंध के स्थान पर आनेवाला उपवाक्य संज्ञा उपवाक्य कहलाता है ।

जैसे–गुरुजी ने कहा कि आज पुस्तक पढ़ाएँगे ।

पहचान–यहाँ 'आज पुस्तक पढ़ाएँगे ।' उपवाक्य 'गुरुजी ने कहा' उपवाक्य के कर्म के रूप में प्रयुक्त हुआ है। सामान्यत: मुख्य उपवाक्य पर क्या प्रश्न करने से जो उत्तर आता है वही संज्ञा उपवाक्य होता है ।

उक्त वाक्य में–गुरुजी ने क्या कहा है ? उत्तर मिलेगा–'आज पुस्तक पढ़ाएँगे' यही संज्ञा उपवाक्य हैं । ये प्राय: कि से आरम्भ करते हैं ।

संज्ञा उपवाक्य के अन्य उदाहरण :

1. सचिन बोला कि मैं मुंबई जा रहा हूँ । ('बोला' क्रिया का कर्म)

2. जान पड़ता है कि पिताजी कुछ बीमार हैं । ('जान पड़ता है'–क्रिया का उद्देश्य)

3. इनसे पूछिए कि ये कौन हैं ? ('यह' का पूरक)

4. मुझे विश्वास हे कि आज अवश्य आएँगे । (विश्वास का समानाधिकरण)

यहाँ रेखांकित उपवाक्य संज्ञा (आश्रित) उपवाक्य है, शेष प्रधान उपवाक्य है ।

(ख) **विशेषण उपवाक्य**–मुख्य (प्रधान) उपवाक्य के किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता बताने वाला उपवाक्य विशेषण उपवाक्य कहलाता है ।

जैसे–1. जो दूसरों की निन्दा करते हैं, वे लोग अच्छे नहीं होते ।

2. वह किताब कहाँ है, जो आप कल लाए थे ।

3. यह वही बालक है, जिसे मैंने कल शहर में देखा था ।

पहचान–मुख्य उपवाक्य पर 'कौन' 'किसे' 'किन्हें' प्रश्न करने पर जो उत्तर आता है, वही विशेषण उपवाक्य होता है। अथवा वाक्य के प्रारम्भ, मध्य या अंत में कहीं भी आ सकता है।

यह प्राय: 'जो' या इसके किसी रूप (जिसे, जिसने, जिसका, जिन्हें, जिनके लिए आदि) से आरम्भ होता है । अथवा वाक्य के प्रारम्भ, मध्य या अंत में कहीं भी आ सकता है।

(ग) **क्रिया-विशेषण उपवाक्य**–मुख्य (प्रधान) उपवाक्य की क्रिया के संबंध में किसी प्रकार की सूचना देने वाला उपवाक्य क्रिया-विशेषण उपवाक्य कहलाता है। जैसे–

1. तुम वहाँ चले जाओ, जहाँ बस खड़ी है ।

इस वाक्य में दो उपवाक्य हैं–मैंने देखा, बाजार में चहल-पहल थी । ये दोनों उपवाक्य 'कि' व्यधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय से जुड़े हैं। इनमें–

मुख्य उपवाक्य है–मैंने देखा ।

आश्रित उपवाक्य है–बाजार में चहल-पहल है ।

(मिश्र वाक्य के उपवाक्य प्रायः कि, जो, जब, जहाँ, जिसने, ज्योंहि-त्योंहि, जिधर-उधर, जैसे-वैसे, जितना-उतना, क्योंकि, यदि-तो, ताकि, यद्यपि-तथापि, अर्थात् मानो आदि व्यधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय से जुड़े होते हैं ।)

नोट–किसी वाक्य के प्रधान और आश्रित उपवाक्यों को परस्पर जोड़ने वाले शब्द व्यधिकरण समुच्चयबोध क कहलाते हैं ।

व्यधिकरण समुच्चबोधक के भेद–व्यधिकरण समुच्चयबोधक के चार भेद होते हैं–

(क) **कारणसूचक**–दो उपवाक्यों को परस्पर जोड़कर होने वाले कार्य का कारण स्पष्ट करने वाले शब्दों को कारण सूचक कहते हैं । जैसे–कि, क्योंकि, इसलिए, चूँकि, ताकि आदि ।

(ख) **संकेत सूचक**–जो योजक शब्द दो उपवाक्यों को जोड़ने का कार्य करते हैं उन्हें संकेतसूचक कहते हैं । जैसे–यदि....तो, जा....तो, यद्यपि-तथापि, यद्यपि.....परन्तु आदि ।

(ग) **उद्देश्य सूचक**–दो उपवाक्यों को परस्पर जोड़कर उनका उद्देश्य स्पष्ट करने वाले शब्द उद्देश्य सूचक कहलाते हैं। जैसे–इसलिए कि, ताकि, जिससे कि आदि ।

(घ) **स्वरूप सूचक**–मुख्य उपवाक्य का अर्थ स्पष्ट करने वाले शब्द स्वरूपसूचक कहलाते हैं। जैसे–यानी, मानो, कि, अर्थात् आदि ।

प्रधान व आश्रित उपवाक्य की पहचान–

1. प्रधान उपवाक्य वह होता है, जिसकी क्रिया मुख्य होती है ।

2. मिश्र वाक्य की मुख्य क्रिया जानने के लिए मिश्र वाक्य को एक सरल वाक्य में रूपांतरित करते हैं । जो क्रिया रूपांतरित होने वाली क्रिया होगी वही मुख्य क्रिया होगी । मुख्य क्रिया वाला यह उपवाक्य प्रधान उपवाक्य होगा ।

रूपांतरिक होने वाली क्रिया वाला उपवाक्य आश्रित होगा । जैसे–

'तुम परिश्रम करते तो अवश्य सफल होते ।'

सरल वाक्य में रूपान्तरण–तुम परिश्रम करने पर अवश्य सफल होते । स्पष्ट है–यहाँ 'परिश्रम करते' क्रिया और वाक्यांत में ही है, अतः प्रधान उपवाक्य है। 'अवश्य सफल होते ।'

मिश्र उपवाक्य में आनेवाले आश्रित उपवाक्य के भेद–ये आश्रित (गौण) उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं–

4. मोहन घर जा रहा होगा ।

5. वह अत्याचार किए जा रहा था ।

6. पाकिस्तान वर्षों से आतंकवाद फैलाए जा रहा है ।

उक्त वाक्यों में रेखांकित क्रियाएँ मुख्य क्रियाएँ हैं ।

ध्यान दें–स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होने वाला उपवाक्य भी सरल वाक्य होता है ।

2. संयुक्त वाक्य–दो या दो से अधिक समान स्तरीय (समानाधिकरण) उपवाक्य किसी समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय से जुड़े होते हैं, वे संयुक्त वाक्य कहलाते हैं । जैसे–

1. हमलोग पुणे घूमने गए और वहाँ चार दिन रहे ।

2. यहाँ आप रह सकते हैं या आपका भाई रह सकता है ।

3. वे बीमार हैं, अतः आने में असमर्थ है ।

ध्यान दें–1. समानाधिकरण उपवाक्य आश्रित न होकर एक-दूसरे के पूरक होते हैं ।

2. इन उपवाक्यों का स्वतन्त्र रूप से भी प्रयोग हो सकता है ।

नोट–जिन समुच्चय बोधक शब्दों के द्वारा दो समान वाक्यांशों पदों और वाक्यों को परस्पर जोड़ा जाता है । उन्हें समानाधिकरण समुच्चयबोधक कहते हैं ।

जैसे–सुनंदा खड़ी थी और अलका बैठी थी ।

इस वाक्य में 'और' समुच्चयबोधक शब्द द्वारा दो समान वाक्य परस्पर जुड़े हैं ।

समानाधिकरण समुच्चयबोधक के भेद–समानधिकरण समुच्चयबोधक चार प्रकार के होते हैं–

(क) संयोजक–जो शब्दों, वाक्यांशों और उपवाक्यों को परस्पर जोड़ने वाले शब्द संयोजक कहलाते हैं। जैसे–और, तथा, एवं व आदि संयोजक शब्द हैं ।

(ख) विभाजक–शब्दों, वाक्यांशों और उपवाक्यों में परस्पर विभाजन और विकल्प प्रकट करने वाले शब्द विभाजक या विकल्पक कहलाते हैं । जैसे–या, चाहे अथवा, अन्यथा आदि ।

(ग) विरोधसूचक–दो परस्पर विरोधी कथनों और उपवाक्यों को जोड़ने वाले शब्द विरोधसूचक कहलाते हैं । जैसे–परन्तु, पर, किन्तु, मगर, बल्कि, लेकिन आदि ।

(घ) परिणामसूचक–दो उपवाक्यों को परस्पर जोड़कर परिणाम को दर्शाने वाले शब्द परिणामसूचक कहलाते हैं। जैसे–फलतः, परिणामस्वरूप, इसलिए, अतः, अतएव, फलस्वरूप, अन्यथा आदि ।

3. मिश्र वाक्य–मिश्र वाक्य में एक उपवाक्य स्वतंत्र (प्रधान) होता है। और एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं। मिश्र वाक्य के उपवाक्य व्यधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय से जुड़े होते हैं। जैसे–मैंने देखा कि बाजार में चहल-पहल है ।

काम करते हैं, तो 'सभी' कह देने से प्रश्न का उत्तर मिल जाता है और वाक्य ठीक हो जाता है । अत: इस वाक्य में 'सभी' शब्द की आकांक्षा थी जिसकी पूर्ति से वाक्य पूरा हो गया ।

योग्यता–योग्यता से तात्पर्य है–पदों के अर्थबोधन की सामर्थ्य । जैसे–किसान लाठी से खेत जोतता है ।

उस वाक्य में 'लाठी' के स्थान पर 'हल' का प्रयोग होना चाहिए क्योंकि 'हल' खेत जोतने के प्रसंग में अर्थबोधन की क्षमता सामर्थ्य रखता है ।

संनिधि (आसक्ति)–वाक्य के शब्दों को बोलने या लिखने में निकटता होना आवश्यक है ।

रूक-रूककर बोले गए शब्द या लिखते समय ठहराव दिखाने के लिए विराम चिह्नों का प्रयोग न करने से अर्थ में बाधा पड़ती है। इस प्रकार अर्थ तभी निकलता है, जब अंश समुचित समय-सीमा में ही बोले जाएँ। इस शर्त को संनिधि कहते हैं ।

वाक्य के घटक

वाक्य के मूल और अनिवार्य घटक हैं–1. कर्ता 2. क्रिया

इनके अतिरिक्त वाक्य के अन्य घटक भी होते हैं–विशेषण, क्रिया-विशेषण, कारक आदि इन्हें ऐच्छिक घटक कहा जाता है ।

1. उद्देश्य 2. विधेय

1. उद्देश्य–जिसके विषय में कुछ कहा जाए । (1. कर्ता 2. कर्ता का विस्तार)

2. विधेय–उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाए। (1. क्रिया, 2. क्रिया का पूरक, 3. कर्म/पूरक, 4. कर्म/पूरक का विस्तार, 5. अन्य कारकीय पद और उनका विस्तार)

उद्देश्य और विधेय को इस प्रकार समझा जा सकता है ।

रचना की दृष्टि से वाक्य-भेद

रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन प्रकार हैं–

1. सरल या साधारण वाक्य

2. संयुक्त वाक्य

3. मिश्र या जटिल वाक्य

1. सरल या साधारण वाक्य–इसमें एक या एक से अधिक उद्देश्य और एक विधेय होते हैं अथवा जिस वाक्य में एक ही मुख्य क्रिया हो, उसे सरल या साधारण वाक्य कहते हैं । जैसे–

1. वह जोर-जोर से <u>रोया</u> ।

2. मैं और मेरा भाई दिल्ली <u>जाएँगे</u> ।

3. वे हर दिन दूध <u>पीते</u> हैं ।

रेखांकित पदों के पद परिचय दीजिए–

1. मीरा घर में रहती है ।

उत्तर–व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्ताकारक, 'रहती है' क्रिया का कर्ता ।

2. यह किताब मेरी है ।

उत्तर–विशेषण, सार्वनामिक विशेषण, एकवचन, स्त्रीलिंग ।

3. मैं धीरे-धीरे चलता हूँ ।

उत्तर–क्रिया विशेषण, रीतिवाचक क्रिया विशेषण, 'चलता हूँ' विशेष्य ।

4. मैं उसे आगरा में मिलूँगा ।

उत्तर–व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक, 'मिलूँगा' क्रिया का अधिकारण (स्थान) ।

5. वह कक्षा में बैठा रहता है ।

उत्तर–पुरुषवाचक सर्वनाम, अन्यपुरुष, पुल्लिंग, एकवचन कर्ताकारक, 'बैठा रहता है' क्रिया विशेष्य ।

6. मनोहर दसवीं कक्षा में पढ़ता है ।

उत्तर–विशेषण, संख्यावाचक विशेषण, क्रमसूचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, 'कक्षा' विशेष्य ।

अभ्यास-प्रश्न

प्रश्न–वाक्यों में रेखांकित पदों का पद परिचय लिखिए ।

1. तोता पिंजरे में बैठकर आम खा रहा है ।
2. छोटी बच्ची हँस रही है ।
3. भारत अनेक संस्कृतियों वाला देश है ।
4. वह प्रत्येक बच्चे को पहचानता है ।
5. कविता सुन्दर है ।

वाक्य-भेद

मनुष्य के विचारों की पूर्णता से प्रकट करने वाला पद समूह, जो व्यवस्थित हो, वाक्य कहलाता है । वाक्य सार्थक शब्दों का व्यवस्थित रूप है ।

वाक्य में आकांक्षा, योग्यता और आसक्ति का होना आवश्यक है ।

आकांक्षा–वाक्य के एक पद को सुनकर दूसरे पद को सुनने या जानने की जो स्वाभाविक उत्कण्ठा जागती है, उसे आकांक्षा कहते हैं । जैसे–दिन में काम करते हैं ।

इस वाक्य को सुनकर हम प्रश्न करते हैं–कौन लोग काम करते हैं ? यदि हम कहें कि 'दिन में सभी

वचन–एकवचन या बहुवचन । कारक–कर्ता कारक, कर्म कारक, करण कारक, संप्रदाय कारक, अपादान।

सर्वनाम–सर्वनाम के छः भेद होते हैं–पुरुषवाचक सर्वनाम, निश्चयवाचक सर्वनाम, अनिश्चयवाचक सर्वनाम, संबंधवाचक, प्रश्नवाचक सर्वनाम तथा निजवाचक सर्वनाम । इनका लिंग, वचन, कारक, क्रिया के साथ संबंध बताना ।

सर्वनामिक विशेषण । लिंग, वचन, विशेष्य जिसकी विशेषता बता रहे हैं ।

क्रिया–क्रिया के दो भेद होते हैं । अकर्मक क्रिया तथा सकर्मक क्रिया । लिंग, वचन, धातु, काल, वाच्य, प्रयोग आदि ।

क्रिया-विशेषण–क्रिया विशेषण के चार भेद होते हैं । कालवाचक क्रिया विशेषण, स्थानवाचक क्रिया विशेषण, रीतिवाचक क्रिया विशेषण, परिणामवाचक क्रिया विशेषण तथा उस क्रिया का उल्लेख करना जिसकी विशेषता बता रहा है ।

समुच्चय बोधक अव्यय–इसके दो भेद होते हैं–समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय, व्यधिकरण समुच्चय बोधक अव्यय । यह जिन शब्दों/पदों को मिला रहा है, उनका उल्लेख करना ।

संबंधबोधक अव्यय–जिन संज्ञा या सर्वनामों में संबंध बताया जा रहा है उसका उल्लेख करना ।

विस्मयादिबोधक अव्यय–जो भाव प्रकट हो रहा है उसका उल्लेख करना ।

उदाहरण स्वरूप कुछ पदों का परिचय दिया जा रहा है ।

(क) मैं कल बीमार था, इसलिए विद्यालय नहीं आया ।

मैं–सर्वनाम, पुरुषवाचक सर्वनाम, उत्तम पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक, था ओर 'आया' क्रिया का कर्ता ।

विद्यालय–संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्मकारक, 'आया' क्रिया का अधिकरण ।

(ख) यह घड़ी मेरे बड़े भाई ने दी है ।

यह–विशेषण, सार्वनामिक विशेषण, स्त्रीलिंग, एकवचन, 'घड़ी' विशेष्य ।

बड़े–विशेषण, गुणवाचक विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन, 'भाई' विशेष्य ।

(ग) नितिन दसवीं कक्षा में पढ़ता है ।

कक्षा–संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, अधिकरण कारक, 'पढ़ता' है । क्रिया का अधिकरण (स्थान) ।

(घ) बच्चों ने अपना काम कर लिया था ।

बच्चों ने–संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, बहुवचन, कर्ताकारक, 'कर लिया था' क्रिया का कर्ता ।

कर लिया था–क्रिया, सकर्मक क्रिया, पुल्लिंग बहुवचन, 'कर-धातु, भूतकाल, कर्तृवाच्य, कर्तृरि प्रयोग ।

2. कर्मवीर संकट को देखकर क्या करते हैं ?

(क) घबरा जाते हैं (ख) गीत गाते हैं

(ग) दूर हट जाते हैं (घ) काम नहीं करते

3. असंभव शब्द का प्रयोग कौन करता है ?

(क) हिम्मत वाले (ख) कायर

(ग) लोभी (घ) कर्मवीर

4. असंभव कायरों का शब्द है–किसने कहा था ?

(क) कवि ने (ख) नेताजी ने

(ग) गांधी जी ने (घ) नेपालियन ने

5. कविता में कौन सा समास रस प्रवाहित है ?

(क) करुण रस (ख) वीर रस

(ग) रौद्र रस (घ) हास्य रस

उत्तर–1. (घ) 2. (ख) 3. (ख) 4. (घ) 5. (ख)

संकलित परीक्षा-FA-1 के लिए सहायक सामग्री

3. पद-परिचय

शब्द और पद में अन्तर–'शब्द' भाषा की स्वतंत्र इकाई है। जब शब्द वाक्य में प्रयुक्त होता है, तो पद कहलाता है ।

जैसे–'लड़का' एक स्वतंत्र शब्द है ।

लड़का घर जाता है ।

पद-परिचय–वाक्य में प्रयुक्त पदों का विस्तृत व्याकरणिक परिचय देना 'पद-परिचय' कहलाता है ।

जैसे–लड़का घर जाता है ।

'लड़का' पद काव्याकरणिक परिचय–जातिवाचक, संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक 'जाता है' क्रिया का कर्ता ।

पद-परिचय के लिए सभी शब्दों के भेद, उपभेद, लिंग, वचन, कारक आदि की जानकारी होनी आवश्यक है ।

पद-परिचय देते समय बातों की जानकारी होनी आवश्यक है, वे हैं–

संज्ञा–संज्ञा के तीन भेद हैं–1. व्यक्तिवाचक संज्ञा, 2. जातिवाचक संज्ञा व भाववाचक संज्ञा लिंग–पुल्लिंग, स्त्रीलिंग ।

3. सुख और दुख कैसे हैं ?

(क) बहुत अच्छे (ख) क्षणभंगुर

(ग) धूप छांव (घ) वैभव संपन्न

4. कवि ने सुख की अभिलाषा में क्या पाया ?

(क) निरादर (ख) सुख का सागर

(ग) मान (घ) भौतिक सुख

5. कवि ने दुख का कारण किसे माना है ?

(क) सुख को (ख) सुख-दुख को

(ग) वीरता को (घ) कायरता को

उत्तर–1. (ख) 2. (ख) 3. (ख) 4. (क) 5. (घ)

3. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर में सही उत्तर छांटकर लिखिए ।

(स) संकटों से वीर घबराते नहीं,
आपदाएं देख छिप जाते नहीं ।
लग गए जिस काम में पूरा किया ।
काम करके व्यर्थ पछताते नहीं
हो सरल अथवा कठिन हो रास्ता,
कर्मवीरों को न इससे वास्ता ।
बढ़ चले तो अंत तक ही बढ़ चले,
कठिनतर गिरिश्रृंग ऊपर चढ़ चले ।
कठिन पथ को देख मुस्कराते सदा,
संकटों के बीच वे गाते सदा ।
है असंभव कुछ नहीं उनके लिए
सरल संभव कर दिखाते वे सदा ।
यह असंभव कायरों का शब्द है
कहा था नेपोलियन ने एक दिन ।
सच बताऊँ जिन्दगी ही व्यर्थ है,
दर्प बिन उत्साह बिन और शक्ति बिन ।

1. कर्मवीरों को किसकी परवाह नहीं होती ?

(क) संकटों की (ख) कठिन रास्तों की

(ग) आपदाओं की (घ) इन सभी की

3. बच्चे कहाँ खेल रहे हैं ?

(क) तरू के नीचे (ख) खेत

(ग) छांव (घ) घर

4. गोरी क्यों शरमा जाती है ?

(क) उसके किसी ने बलखाते देख लिया है (ख) उसके सिर पर भारी गगरिया है

(ग) छोटे बच्चों को देखकर (घ) सहसा किसी गुरूजन के सम्मुख आ जाने पर

5. वृक्ष शब्द का पर्यायवाची है :

(क) वट (ख) पौधा

(ग) तरू (घ) पुष्प

उत्तर–1. (घ) 2. (घ) 3. (क) 4. (घ) 5. (ग)

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर में सही उत्तर छांटकर लिखिए ।

(ब) बहुत नाज नाज था अपने सुख पर
पर न टिका दो दिन सुख वैभव
एक बूंद भी नहीं रहा वह
देखा जब दिन रात चीड़वन
नित कराह आहें भरता है
मैंने दुख कातार हो होकर
जब जब दर–दर कर फैलाया
सुख के अभिलाषी मन मेरे
तब तब सदा निरादार पाया
ठोकर खा–खाकर पाया है
दुख का कारण कायरता है ।

1. कवि को किस पर नाज था ?

(क) दुख पर (ख) सुख पर

(ग) कविता पर (घ) लेखन पर

2. कवि किसको सागर समझ बैठा ?

(क) क्षणिक सुख को (ख) सुख दुख को

(ग) जीवन को (घ) कायरता को

2. अपराजेय का विलोम है :

(क) पराजेय (ख) पराजित

(ग) अजय (घ) अजेय

3. अनुभवी जनों का कहना है कि जीवन कर्मक्षेत्र है रचना की दृष्टि से कैसा वाक्य है ?

(क) सरल (ख) संयुक्त

(ग) मिश्र (घ) साधारण

4. यह पाठ आपको क्या प्रेरणा देता है ?

(क) संघर्ष की (ख) कर्म की

(ग) शक्ति की (घ) मौज मस्ती की

5. वीर एक से अधिक बार कभी नहीं मरते का आशय है :

(क) वीर एक बार ही मरते हैं (ख) वीर पहली बार मर जाते हैं

(ग) वीर मर-मरकर नहीं जीते (घ) वीर अमर हो जाते हैं

उत्तर–1. (क) 2. (ख) 3. (ग) 4. (घ) 5. (ग)

अपठित बोध–काव्यांश

1. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के विकल्प चुनकर लिखिए–

(अ) चले गांव की ओर जहाँ पर हरे खेत लहराते,
मेड़ों पर हैं कृषक घूमते सुख से गीत गाते ।
गेहूँ बना मटर जौ लेकर सिर पर भार खड़े हैं
बीच-बीच में प्रहरी जैसे दिखते वृक्ष अड़े हैं ।
चले गांव की ओर झोपड़े जहाँ झुके धरती में,
तरू के नीचे खेल रहे हैं बच्चे निज मस्ती में ।
कटि पर लिए गगरिया गोरी आती है बलखाती,
देख किसी गुरुजन को सम्मुख सहसा शरमा जाती ।

1. खेतों में गेहूँ चना मटर कैसे दिखाई देते हैं ?

(क) लहराते हुए (ख) गाते हुए

(ग) अड़े हुए (घ) बोझ लिए खड़े हुए

2. कवि ने प्रहारी किन्हें कहा है ?

(क) गेहूँ चना मटर (ख) कृषकों

(ग) खेतों (घ) वृक्षों

2. हमारे यहाँ परतंत्रता आई

(क) आंधी के समान (ख) तूफान के समान

(ग) रोग के कीटाणु लाने वाले मंद समीर के समान

(घ) वर्षा के समान

3. शिक्षा, कला, साहित्य आदि किसके वाहक हैं ?

(क) परिवार (ख) व्यक्ति

(ग) समाज (घ) संस्कार

4. हम किसके अभाव में जीवित रहने की कल्पना से सिहर उठते हैं ?

(क) लोक भाषा (ख) मातृभाषा

(ग) विदेशी भाषा (घ) राजभाषा

5. जीवन की पूर्णता के लिए आवश्यक है ?

(क) सुख सुविधाओं का होना (ख) उसके मनोजगत को मुक्त करना

(ग) अपनी वाणी का होना (घ) स्वतंत्र रहना

4. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर में सही उत्तर छांटकर लिखिए ।

(द) समस्त ग्रन्थों एवं ज्ञानी अनुभवी जनों का कहना है कि जीवन एक कर्मक्षेत्र है । हमें कर्म के लिए जीवन मिला है। कठिनाइयों एवं दुख और कष्ट हमारे शत्रु हैं जिनका हमें सामना करना है और उनके विरुद्ध संघर्ष करके हमें विजयी बनाना है वृद्धा दुख अंग्रेजी के यशस्वी नाटककार शेक्सपीयर ने ठीक ही कहा है कि ''कायर अपनी मृत्यु से पूर्व अनेक बार मृत्यु का अनुभव कर चुके होते हैं। किन्तु वीर एक से अधिक बार कभी नहीं मरते''।

विश्व के प्राय: समस्त महापुरुषों के जीवन वृत्त अमरीका के निर्माता जॉर्ज वाशिंगटन और राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन से लेकर भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और भारत के प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री के जीवन चरित्र हमें यह शिक्षा देते हैं कि महानता का रहस्य संघर्षशीलता, अपराजेय व्यक्तित्व है। इन महापुरुषों को जीवन में अनेक संकटों का सामना करना पड़ता है। परन्तु वे घबराए नहीं संघर्ष करते रहे और अंत में सफल हुए संघर्ष के मार्ग में अकेला ही चलना पड़ता है। कोई बाहरी शक्ति आपको सहायता नहीं करती है। परिश्रम, दृढ़ इच्छाशक्ति व लगन आदि मानवीय गुण व्यक्ति को संघर्ष करने और जीवन में सफलता प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करते हैं ।

1. इस अनुच्छेद का उपयुक्त शीर्षक दीजिए :

(क) जीवन एक कर्मक्षेत्र (ख) सफलता का रहस्स्य

(ग) संघर्ष और सफलता (घ) बढ़ते चलो

4. सहयोग और सेवा की भावना से आशय है ?

(क) सेवा भावना (ख) सहकारिता

(ग) सहिष्णुता (घ) सद्भावना

5. इस गद्यांश के लिए उपर्युक्त शीर्षक होगा :

(क) अधिकार और कर्तव्य (घ) अच्छा नागरिक

(ग) आदर्श जीवन (घ) सामाजिक जीवन

उत्तर–1. (क) 2. (ग) 3. (ग) 4. (ख) 5. (ख)

3. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर में सही उत्तर छांटकर लिखिए ।

(स) आज हम एक स्वतंत्र राष्ट्र की स्थिति पा चुके हैं । राष्ट्र की अनिवार्य विशेषताओं में दो हमारे पास हैं–भौगोलिक अखंडता और सांस्कृतिक एकता परन्तु अभी तक हम उस वाणी को प्राप्त नहीं कर सके हैं जिसमें एक स्वतन्त्र राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों के निकट अपना परिचय देता है। जहां तक बहुभागी भाषी होने का प्रश्न है ऐसे देशों की संख्या कम नहीं है जिनके भिन्न भागों में भिन्न भाषाओं की स्थिति है । पर उनकी अविच्छन्न स्वतंत्रता की परंपरा ने उन्हें विषम स्वरों से एक राग रच लेने की क्षमता दे दी है। हमारे देश की कथा कुछ दूसरी है। हमारी परतंत्रता आंधी तूफान की तरह नहीं आई जिसका आकस्मिक संपर्क तीव्र अनुभूति से अस्तित्व को कंपित कर देता है। वह तो रोग के कीटाणु लाने वाले मंद समीर के समान सांस में समाकर शरीर में व्याप्त हो गई है। हमने अपने संपूर्ण अस्तित्व से उसके भार को दुर्वह नहीं अनुभव किया और हमें यह ऐतिहासिक सत्य भी विस्मृत हो गायकी की कोई भी विजेता विजित कर राजनीतिक प्रभुत्व पाकर ही संतुष्ट नहीं होता क्योंकि सांस्कृतिक प्रभुत्व के बिना राजनीतिक विजय न पूर्ण है न स्थायी । घटनाएँ संस्कारों में चिरजीवन पाती है और संस्कार के अक्षय वाहक शिक्षा, साहित्य कला आदि है। दीर्घकाल से विदेशी भाषा हमारे विचार विनिमय और शिक्षा का माध्यम ही नहीं रही वह हमारे विद्वान और संस्कृत होने का प्रमाण भी मानी जाती रही है। ऐसी स्थिति में यदि हममें से अनेक उसके अभाव में तो चिकित्सा संभव नहीं होती। राष्ट्र जीवन की पूर्णता के लिए उसके मनोजगत को मुक्त करना होगा और यह कार्य विशेष प्रयत्न साध्य है क्योंकि शरीर को बांधने वाली श्रृंखला को जकड़ने वाली श्रृंखला अधिक दृढ़ होती है ।

1. स्वतंत्रता प्राप्त करने के पश्चात् भी राष्ट्रभाषा के रूप में हम अब तक ठीक प्रकार से क्या प्राप्त नहीं कर पाए हैं ?

(क) वाणी (ख) विचार

(ग) भाव (घ) सोच-समझ

4. बेटा बाप से क्यो झुँझला गया ?

(क) बाप द्वारा बेटे की मूर्तियों में निरंतर दोष निकालने के कारण

(ख) बाप द्वारा बेटे की मूर्तियों की प्रशंसा

(ग) बेटे की मूर्तियों की कीमत पांच रुपये मिलने के कारण

(घ) बेटे में घमंड होने के कारण

5. आपकी मूर्तियों हमेशा डेढ़ दो रुपये में ही क्यों बिकती रही ?

(क) बाप में कला की पूर्णता का अहंकार हो गया था

(ख) बाप की मूर्तियां कच्ची मिट्टी की थी

(ग) बाप सस्त बेचने का आदि हो गया था

(घ) बाप से देहाती लोग ही मूर्तियां खरीदते थे ।

उत्तर–1. (क) 2. (ख) 3. (क) 4. (क) 5. (क)

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर में सही उत्तर छांटकर लिखिए ।

(ब) अच्छा नागरिक बनने के लिए भारत के प्राचीन विचारकों ने कुछ नियमों का प्रावधान किया है। इन नियमों में वाणी और व्यवहार की शुद्धि कर्तव्य और अधिकार का समुचित निर्वाह, शुद्धतम पारस्परिक सद्भाव, सहयोग और सेवा की भावना आदि नियम बहुत महत्वपूर्ण माने गए हैं। इन सभी गुणों का विकास एक बालक में यदि उसकी बाल्यावस्था से ही किया जाए तो वह अपने देश का श्रेष्ठ नागरिक बन सकता है। वाणी एवं व्यवहार की मधुरता सभी के लिए सुखदायक होती है समाज में हार्दिक सद्भाव की वृद्धि करती है, किन्तु अहंकारहीन व्यक्ति ही स्निग्ध वाणी और शिष्ट व्यवहार का प्रयोग कर सकता है। जिस प्रकार एक व्यक्ति समाज में रहकर अपने व्यवहार से कर्तव्य और अधिकार की भावना से भावित रहना चाहिए। उसका कर्तव्य हो जाता है कि न तो वह स्वयं कोई ऐसा काम करे और न ही दूसरों को करने दें, जिससे देश के सम्मान, संपत्ति और स्वाभिमान को ठेस पहुँचे ।

1. अच्छे नागरिक बनने के गुणों का विकास मनुष्य में कब से करना चाहिए ?

(क) बाल्यावस्था से (ख) किशोरावस्था से

(ग) युवावस्था से (घ) किसी भी अवस्था से

2. किसकी मधुरता सबके लिए सुखदायी होती है ?

(क) खान–पान की (ख) पहनने ओढ़ने की

(ग) वाणी व्यवहा की (घ) घर–बाहर की

3. कैसा व्यक्ति स्निग्ध वाणी और शिष्ट व्यवहार का प्रयोग करता है ?

(क) अवसरवादी (ख) अहंकारी

(ग) विनीत (घ) अलमस्त

प्रथम सत्र अप्रैल से सितम्बर

खण्ड-(क)

अपठित गद्यांश

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर में सही उत्तर छांटकर लिखिए ।

(अ) एक बाप ने बेटे को भी मूर्तिकला सिखाई । दोनों हाट में जाते और अपनी-अपनी मूर्तियां बेचकर आते। बाप की मूर्ति डेढ़ दो रुपये में बिकमी पर बेटे की मूर्तियों का मूल्य केवल आठ दस आने से अधिक न मिलता । हाट से लौटने पर बेटे को पास बैठकार बाप उसकी मूर्तियों में रही त्रुटियों को समझाता और अगले दिन उन्हें सुधारने के लिए कहता। यह क्रम वर्षों से चलता रहा। लड़का समझदार था। उसने पिता की बातें ध्यान से सुनी और अपनी कला में सुधार करने का प्रयत्न करता रहा ।

कुछ समय बाद लड़के की मूर्तियां भी डेढ़ रुपये की बिकने लगी । बाप भी उसी तरह समझाता और मूर्तियों में होने वाले दोषों की तरफ उसका ध्यान खींचता । बेटे ने और अधिक ध्यान दिया तो कला भी और अधिक निखरी। मूर्तियां पांच-पांच रुपये की बिकने लगी। सुधार के लिए समझाने का क्रम बाप ने तब भी बंद न किया। एक दिन बेटे ने झुंझालाकर कहा आप तो दोष निकालने की बात बंद ही नहीं करते। मेरी कला अब तो आप से भी अच्छी है । मुझे मूर्ति के पांच रुपये मिलते हैं जबकि आपको दो ही रुपये।

बाप ने कहा बेटा, जब मैं तुम्हारी उम्र का था तब मुझे अपनी कला की पूर्णता का अहंकार हो गया और फिर सुधार की बात सोचना छोड़ दिया। तब से मेरी प्रगति रूक और दो रुपये से अधिक की मूर्तियां न बना सका । मैं चाहता हूँ वह भूल तुम न करो । अपनी त्रुटियों को समझने और सुधारने का क्रम सदा जारी रखो ताकि बहुमूल्य मूर्तियां बनाने वाले श्रेष्ठ कलाकारों की श्रेणी में पहुँच सको ।

1. बाप और बेटे क्या बनाते थे ?

(क) मूर्तियाँ (ख) मूर्तिकला

(ग) रुपये (घ) कुछ नहीं

2. हाट से लौटकर बाप अपने बेटे को क्या समझाता था ?

(क) मूर्तियां की अच्छाइयों को (ख) मूर्तियों की त्रुटियों को

(ग) मूर्तियों की कला को (घ) मूर्तियों की बिक्री को

3. प्रारम्भ में बेटे की मूर्तियों का मूल्य कितना मिलता था ?

(क) आठ-दस आने (ख) दस-बारह आने

(ग) छः-सात आने (घ) चार-छः आने

टिप्पणी :

1. फॉरमैटिव मूल्यांकन का अभिप्राय अधिगम के मूल्यांकन से है। इसलिए विद्यालय उपर्युक्त विभाजन का अपनी सुविधानुसार उपयोग कर सकते हैं ।
2. फॉरमेटिव मूल्यांकन से संबंधित सभी कार्यकलाप जैसे विभिन्न प्रकार के शैक्षिक खेल पहेली, प्रतियोगिता परियोजना (Project), भूमिका निर्वहन (Roleplay), कहानी, लेखन, नाट्य रचनांतरण (Dramaliasation), आदि कक्षा में अथवा विद्यालय में करवाये जाने वाले कार्यकलाप हैं। यदि कोइ ऐसा कार्यकलाप है जिसमें विद्यालय से बाहर जाकर कार्य करने की आवश्यकता पड़ती है तो ऐसी स्थिति में यह कार्य शिक्षिका के पर्यवेक्षण व मार्गदर्शन में होने चाहिए ।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, पटना संभाग
विषय–हिन्दी

सामान्य निर्देश :

अपठित का अर्थ होता है जो पढ़ा नहीं गया हो अर्थात् जो पाठ्यक्रम की पुस्तिका से नहीं लिया जाता है । पद्यांश व गद्यांश के विषय से प्रश्न पूछे जाते हैं। इससे छात्रों का मानसिक व्यायाम होता है। उनके साहित्यिक ज्ञान क्षेत्र का विस्तार भी होता है, साथ ही छात्रों की व्यक्तिगत योग्यता एवं अभिव्यक्ति की क्षमता भी बढ़ती है।

विधि :

अपठित गद्यांश व पद्यांश पर आधारित प्रश्नों को हल करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए–

1. दिये गये गद्यांश पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ें ।
2. पढ़ते समय मुख्य बातों को रेखांकित करें ।
3. प्रश्नों के उत्तर देते समय भाषा सरल होनी चाहिए ।
4. उत्तर सरल, संक्षिप्त व सहज होने चाहिए ।
5. उत्तर में जितना पूछा जाय उतना ही लिखना चाहिए ।
6. शीर्षक सम्बन्धी प्रश्न का गद्यांश व पद्यांश के केन्द्रीय भाव को ध्यान में रखकर उत्तर दीजिए ।
7. उत्तर सदैव पूर्ण वाक्य में दें ।

क्र.सं. सं.	पाठ्य पुस्तक	प्रथम पुस्तक (अप्रैल से सितम्बर)			द्वितीय सत्र (अक्टूबर से मार्च)		
	व्याकरण	**FA1 10**	**FA2 10**	**SAI 30**	**FA3 10**	**FA4 10**	**SAII 30**
1.	शब्द निर्माण– उपसर्ग–2 अंक प्रत्यय–2 अंक समास–3 अंक	√		√	√		√
2.	अर्थ की दृष्टि से वाक्य के भेद–4 अंक		√	√			√
3.	अलंकार–4 अंक (शब्दालंकार अनुप्रास, यमक, श्लेष) (अर्थालंकार उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति मानवीकरण)	√	√	√	√		√
4.	अपठित गद्यांश (5 + 5 = 10 अंक)			√			√
5.	अपठित काव्यांश (5 + 5 = 10 अंक)			√			√
6.	पत्र लेखन (5 अंक)			√			√
7.	निबन्ध लेखन (10 अंक)			√	√		√
8.	प्रतिवेदन (5 अंक)		√	√			√

निर्धारित पुस्तकें :

1. पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग–1 (कक्षा–नौवीं हेतु)
2. पाठ्य पुस्तक क्षितिज भाग–2 (कक्षा–दसवीं हेतु)
3. पूरक पुस्तक कृतिका भाग–1 (कक्षा–नौवीं हेतु)
4. पूरक पुस्तक कृतिका भाग–2 (कक्षा–दसवीं हेतु)

		FA 1 10	FA 2 10	FA I 30	FA 3 10	PSA 10	SA II 30
12.	माखनलाल चतुर्वेदी– कैदी और कोकिला		√	√			
13.	सुमित्रानन्दन पन्त– ग्राम श्री		√	√			
14.	केदारनाथ अग्रवाल–चन्द्र गहना से लौटती बेर				√		√
15.	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना– मेघ आए				√		√
16.	चन्द्रकांत देवताले– यमराज की दिशा						√
17.	राजेश जोशी–बच्चे काम पर जा रहे हैं						√
	कृतिका	FA 1 10	FA 2 10	FA I 30	FA 3 10	PSA 10	SA II 30
1.	फणीश्वरनाथ रेणु– इस जल प्रलय में	√		√			
2.	मृदुला गर्ग– मेरे संग की औरतें		√	√			
3.	जगदीश चन्द्र माथुर– रीढ़ की हड्डी				√		√
4.	माटी वाली–विद्यासागर नौटियाल				√		√
5.	शमशेर बहादुर सिंह– किस तरह आखिरकार मैं हिन्दी में आया				√		√

कक्षा नौवीं हिन्दी 'अ' -संकलित एवं फॉरमैटिव परीक्षाओं हेतु पाठ्यक्रम का विभाजन
(2014-15)

क्र. सं.	पाठ्य पुस्तक	प्रथम सत्र (अप्रैल से सितम्बर)			द्वितीय सत्र (अक्टूबर से मार्च)		
	क्षितिज भाग-1 गद्य खण्ड	FA 1 10	FA 2 10	FA I 30	FA 3 10	PSA 10	SA II 30
1.	प्रेमचन्द–दो बैलों की कथा	√		√			
2.	राहुल सांस्कृत्यायन– ल्हास की ओर	√		√			
3.	श्यामचरण दूबे–उपभोक्तावाद की संस्कृति		√	√			
4.	जाबिर हुसैन–साँवले सपनों की याद		√	√			
5.	चपला देवी–नाना साहब की पुत्री देवी मैना देवी को भस्म कर दिया गया				√		√
6.	हरिशंकर परसाई– प्रेमचन्द्र के फटे जूते				√		√
7.	महादेवी वर्मा–मेरे बपचन के दिन						√
8.	हजारी प्रसाद द्विवेदी– एक कुत्ता और एक मैना						√
	काव्य खण्ड	FA 1 10	FA 2 10	FA I 30	FA 3 10	PSA 10	SA II 30
9.	कबीर-साखियाँ एवं सबद	√		√			
10.	ललद्यद-वाख	√		√			
11.	रसखान-सवैये	√	√	√			

संकलित परीक्षा प्रथम

पाठ-सूची

कक्षा-दसवीं **विषय - हिन्दी**

		पृ०सं०
1.	पाठ्यक्रम	
2.	अपठित गद्यांश	4-6
3.	अपठित काव्यांश	7-12
4.	पद परिचय	15-17
5.	वाक्य भेद–रचना के आधार पर	17-25
6.	रस	25-28
7.	सार लेखन	28-28
8.	नेताजी का चश्मा–स्वयं प्रकाश	28-32
9.	बालबोबिन भगत–रामवृक्ष बेनीपुरी	32-35
10.	पद–सूरदास	35-38
11.	सवैया–देव	38-41
12.	माता का अँचल–शिवपूजन सहाय	41-42
13.	लखनवी अंदाज–यशपाल	42-47
14.	मानवीय करुणा को दिव्य चमक–सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	47-51
15.	आत्माकथ्य–जयशंकर प्रसाद	51-52
16.	उत्साह–निराला	52-55
17.	यह दंतुरिन मुस्कान–नागार्जुन	55-56
18.	फसल–नागार्जुन	56-57
19.	जॉर्ज पंचम की नाक–कमलेश्वर	57-59
20.	आदर्श प्रश्न	60-63

PREFACE

Kendriya Vidyalaya Sangathan is a pioneer organization. which caters to the all round development of the students. Time to time various strategies have been adopted to adorn the students with academic excellence.

This support material is one such effort by Kendriya Vidyalaya Sangathan, an empirical endeavor to help students learn more effectively and efficiently. It is designed to give proper platform to students for better practice and understanding of the chapters. This can suitably be used during revision. Ample opportunity has been provided to students through master cards and question banks to expose them to the CBSE pattern. It is also suggested to students to keep in consideration the time-management aspect as well.

I extend my heartiest gratitude to the Kendriya Vidyalay. Sangathan authorities for providing the support material to the students prepared by various Regions. The same has been reviewed by the Regional Subject Committee of Patna Region who have worked arduously to bring out the best for the students. I also convey my regards to the staff of Regional Office, Patna for their geniune cooperation.

In the end, earnestly hope that this material will not only improve the academic result of the students but also inculcate learning habit in them.

M. S. Chauhan

Deputy Commissioner

KENDRIYA VIDYALAYA
SANGATHAN
Patna Region

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

STUDY MATERIAL
2014-15
SA-I

CLASS X
HINDI